श्री श्री भागवत-पत्रिका

वर्ष—१९ राष्ट्रभाषा हिन्दीमें श्रीश्रीरूप-रघुनाथकी वाणीकी एकमात्र वाहिका संख्या—१-४

जगद्गुरु श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुर प्रभुपाद

• स्तवमाला • गुरुवर्गका वाणी-वैभव • श्रील गुरुदेवके वचनामृत

संस्थापक एवं नियामक

नित्यलीलाप्रविष्ट परमहंस ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री
श्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजके

अनुगृहीत

नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री
श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज

प्रेरणा-स्रोत
नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री
श्रीमद्भक्तिवेदान्त वामन गोस्वामी महाराज

सम्पादक—श्रीमाधवप्रिय दास ब्रह्मचारी, श्रीअमलकृष्ण दास ब्रह्मचारी

प्रचार सम्पादक संघ—त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त वन महाराज
त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त सिद्धान्ती महाराज
त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त पद्मनाभ महाराज
श्रीयुक्ता उमा दासी, श्रीयुक्ता सुचित्रा देवी दासी

सहकारी सम्पादक संघ—डॉ. श्रीअच्युतलाल भट्ट, एम. ए., पी-एच. डी.
त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारसिंह महाराज
डॉ. (श्रीमती) मधु खण्डेलवाल, एम. ए., पी-एच. डी.
श्रीपरमेश्वरी दास ब्रह्मचारी 'सेवानिकेतन'

कार्याध्यक्ष—श्रीपाद प्रेमानन्द दास ब्रह्मचारी 'सेवारत्न'

कार्यकारी मण्डल—श्रीगोकुलचन्द्र दास, श्रीसुबलसखा दास, श्रीसञ्जय दास

ले-आउट, फोटो एवं डिजाइन—श्रीभक्तबान्धव कृष्णकारुण्य महाराज

कार्यकारी सहायक—गौरराज दास, राधारमण दास, विश्वरूप दास

आभार—सुशीलकृष्ण दास, शचीनन्दन दास

श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ
जवाहर हाट, मथुरा-२८१००१(उ. प्र.)

श्रीगौड़ीय वेदान्त समिति ट्रस्टकी ओरसे
त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त माधव महाराज द्वारा
श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ, जवाहर हाट, मथुरासे प्रकाशित।

www.purebhakti.com www.harikatha.com
bhagavata.patrika@gmail.com

॥ श्रीश्रीगुरु-गौराङ्गौ जयतः ॥

वर्ष १९ | श्रीगौराब्द – ५३६ | वि.सं.– २०७९; विष्णु-वामन मास ; सन्– २०२२ (१९ मार्च-१३ जुलाई) | संख्या १–४

विषय-सूची

'स्तव-वैभव'

श्रीस्तवमालाके अन्तर्गत अथारिष्टवधादिकम्.....२
—श्रील रूप गोस्वामी

गुरुवर्गका वाणी-वैभव

रागात्मिका भक्ति.....५
रागानुगा भक्ति.....५
—श्रील भक्तिविनोद ठाकुर

श्रीश्रीसरस्वती-संलाप ९
—श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर 'प्रभुपाद'

अष्टग्रह-समावेशरूप विपदामें भी भक्तोंको हरिकीर्तन करते हुए हरिभजन करना चाहिए.....१२
—श्रील भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज

श्रीगौड़ीय-पत्रिकाका सत्ताईसवाँ वर्ष..... १३
—श्रील भक्तिवेदान्त वामन गोस्वामी महाराज

श्रील गुरुदेवके वचनामृत

भगवद्-भक्ति शोक-मोह-भयको दूर करनेवाली है १६
—ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज

जगद्गुरु श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी और उनका विचार-वैशिष्ट्य..... १८
—ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज

धारावाहिक

श्रीगौराङ्ग-सुधा.....२८

श्रीचैतन्य महाप्रभुके मनोऽभीष्ट-संस्थापक
श्रीश्रील रूप गोस्वामी प्रभुके द्वारा रचित

श्रीस्तवमालाके अन्तर्गत अथारिष्टवधादिकम्।

(वर्ष-१६, संख्या-११-१२से आगे)

व्रजलीलां वर्णयित्वा तामेव जिगासुः प्रार्थयति-

अपवर्गसुखस्पृहोरुवल्लीस्थलकूलंकषवीचिरम्बुजाक्ष।
तव केलिसुधानदीयं शिशिराङ्गी गलजाङ्गलं गतास्तु॥ ३९॥

हे कमलनयन श्रीकृष्ण! जिनकी तरङ्गसे अति विस्तृत मुक्तिसुखकी वासनारूपी लताका मूलसे उत्पाटन (उखाड़ना) होता है, जिसमें अवगाहन करनेसे भक्तोंके अङ्ग सुशीतल होते हैं, आपकी वही केलि (क्रीडा) सुधानदी हमारे कण्ठरूपी मरुभूमिपर निरन्तर प्रवाहित हो॥ ३९॥

व्रजलीलायां नैष्ठिकतां व्यञ्जयन्नाह—

पुरुषोत्तमस्य परितो गोकुलचरितामृतेन कृतसेकः।
प्रेममकरन्दस्यन्दं तनोतु मम चित्तमाकन्दः॥ ४०॥

हमारा चित्तरूपी आम्रवृक्ष पुरुषोत्तम श्रीकृष्णके गोकुल लीलामृतके द्वारा सब प्रकारसे अभिषिक्त होकर निरन्तर प्रेम मकरन्द वर्षण करे॥ ४०॥

अथ रङ्गस्थले क्रीडा-

क्रियाद्वः कल्याणं भुजसमरशौटीर्यकणिका-
विकासेनोद्धूय प्रकटबलमल्लप्रतिभटान्।
भजन्स्वैरी रङ्गे मदकलमृगेन्द्रस्य ललितं
कचाकृष्टिक्रीडामथितमथुरारिर्मधुरिपुः॥ ४१॥

जिन्होंने रङ्गस्थलमें बाहुयुद्धमें अणुमात्र विक्रमका प्रकाश करते हुए प्रबल प्रतिद्वन्द्वी मल्लोंका वधकर मतवाले सिंहकी भाँति मथुराकण्टक कंसका केशोंसे पकड़कर वध किया, वही मधुसूदन श्रीकृष्ण आप लोगोंका कल्याण करें॥ ४१॥

यः पौरलोकारविन्दावलीहेलिरङ्गीकृतोत्तुङ्गरङ्गस्थलीकेलि-रापीतकौशेयशोभोल्लसन्मूर्तिरावर्तितशेषलोकोत्सवस्फूर्ति-रुत्फुल्ललावण्यकल्लोनीसिन्धुराधिज्वराधीनदीनावलीबन्धु-रक्षीणकण्ठीरवाकुण्ठविक्रान्तिरुग्रं ममर्द्दोरु दन्तीन्द्रमश्रान्ति यं निर्मितोतुङ्गमातङ्गनिर्वाणमुर्वीमहानन्दवृन्दानि कुर्वाण-मुद्धासिदानास्रबिन्दूर्मिवर्माणमानम्रसंतोषनिर्माणकर्माण-मुन्मीलितास्तोकविस्तारतारुण्यमन्तस्तमस्तोमविध्वंसिकारुण्य-मालोकयामास भिन्नारिमर्माणमग्रे जनश्रेणिरुद्दामशर्माण-मुद्दण्डदोर्दण्डदर्पानुविद्धेन विस्मापितामन्दगन्धर्वसिद्धेन पीनांसपिण्डोल्लसद्दन्तदण्डेन विद्योतिघर्माम्बुसंवीतगण्डेन दीप्तेन्द्रनीलावलीराजदङ्गेन लब्धप्रलम्बारिगोपालसङ्गेन मल्लावली येन रङ्गप्रवेशेन विक्षोभिता मङ्क्षु वीरेन्द्रवेशेन मन्दस्मितारब्धकुन्दालिनिन्दाय वृन्दारकानन्दिपादारविन्दाय चञ्चन्नखश्रेणिभाचक्रवालाय वक्षस्तटीलक्ष्यनक्षत्रमालाय फुल्लीभवच्चिल्लिचापप्रसर्पाय निर्वाहितापूर्वकन्दर्पदर्पाय नार्यो मुहुद्दृष्टमाधुर्यचर्याय यस्मै स्पृहां चक्रुराभीरवर्याय यस्माद्विलासेन रङ्गस्थले रन्तुरानम्रलोकातिशोकापदाहन्तु-रिन्द्रादिवृन्दारकनन्दनिर्मातुरक्ष्णोर्विनोदेन वृष्ण्यन्धकान्पातु-रार्याङ्गनातीव्रसाध्वीव्रतच्छेत्तुरव्यग्रमल्लाङ्गनातुष्टिहनिर्भेत्तु-रावल्गतः क्षौणिभर्त्तापि सत्रासमासाद्य विभ्रान्तधीवृत्तिरत्रास यस्यार्द्दितोद्दण्डदुष्टाभिमानस्य कष्टं पितृभ्यां तु संद्रश्यमानस्य रङ्गस्थलीवल्गिपादप्रवालस्य भालान्तविश्रान्तकान्ताग्रवालस्य पद्मावतीपुत्रहन्मर्मकीलस्य सर्वात्मनाभीष्टदोर्युद्धलीलस्य युद्धं परिस्फारशौटीर्यघोरस्य चाणूरमल्लेन वृत्तं किशोरस्य यस्मिन्मुनिश्रेणिवक्रस्फुरन्नाम्नि विस्तीर्णवक्षःस्थलीविभ्रमद्दाम्नि नव्योल्लसद्वारिवाहावलीधाम्नि निःशेषवीरोत्करोल्लङ्घनस्थाम्नि प्रोद्यत्पदद्योतनिर्धूतपञ्चेषुसौन्दर्यदर्पोद्गमे रम्यमञ्चेषु तुङ्गेष्ववस्थाय चक्रुर्विलक्षाणि भक्तिं प्रभौ भोजदाशार्हलक्षणि चाणूरमूर्धन्यमल्लेभपारीन्द्र स श्रीभवान्पातु मां गोपनारीन्द्र सव्यभ्रमन्मुष्टिकोत्ताड़िताला‍ङ्क नेपथ्यभारस्फुरद्धेनुपालाङ्क विद्रावितोद्दामदुर्मल्लपालीक निःशङ्कलास्योल्लसत्पादनालीक रम्याङ्गहारश्रियाकृष्णसाध्वीक ताभिर्निपीताङ्गसौरभ्यमाध्वीक गोपाङ्गनानेत्रपानैकभृङ्गार पुष्पावलीलब्धसर्वाङ्गश‍ृङ्गार संदर्शितोदारमाधुर्यविस्तार विध्वंसनारब्धभोजेन्द्रनिस्तार भो देवकीशौरिबन्धर्त्तिलुण्ठाक दिक्चक्रवालक्वणत्कीर्त्तिघण्टाक भक्तोग्रसेनार्पितस्फीतसप्ताङ्ग मां रक्ष कुब्जाङ्गरागेण लिप्ताङ्ग॥
मल्लानुल्लङ्घ्य रङ्गे करविचलदसि र्येन मञ्चप्रपञ्चे केशेष्वाकृष्य कंसो विघटितमुकुटं विघ्नहेतुर्निजघ्ने।
स त्वं सत्त्वाधिराज स्फुरदुरुकरुणाडम्बरालम्बचेताः पाताद्दुःखाब्धिपाताद्यदुकुलकमलोद्दण्डचण्डद्युतिर्मां॥ ४२॥

जो मधुपुरी (मथुरा) निवासी रूपी कमलोंके लिये सूर्य स्वरूप हैं, जो पीतवर्णके रेशमी वस्त्रोंसे सुशोभित हैं, जो कंसके द्वारा सताये लोगोंको आनन्द प्रदान करनेवाले हैं, जो उच्छलित लावण्य तरङ्गिणी समूहोंके आश्रय सिन्धुस्वरूप हैं, जो मानसिक वेदनाग्रस्त जनोंके परम बन्धु हैं, जो तरुण आयुके सिंहके समान बलवान हैं, जिन्होंने कंसकी रङ्गभूमिमें आकर उसके कुवलयापीड़ नामक हाथीका अनायास ही वध कर दिया, वे श्रीकृष्ण जययुक्त हों।

जिन्होंने अति विशालकाय गजराजका वध करके पृथ्वीके सभी लोगोंको महानन्दमें निमग्न कर दिया और जो रक्तवर्णके कवचके समान इस गजराजके देहसे उत्पन्न मदबिन्दु और रक्त-प्रवाहसे भूषित हैं। मथुरावासियोंको जो नवयौवन शोभान्वित, शत्रुओंके संहारकारी, भक्तजनोंके आनन्दवर्धक, करुणाके द्वारा सभीके चित्तमें स्थित अहङ्कारका नाश करनेवाले एवं सभीके मङ्गलकारी रूपमें दिखलायी दे रहे हैं, ऐसे श्रीकृष्ण जययुक्त हों।

गन्धर्व, सिद्ध, चारणादि देवगण जिनकी बलिष्ठ भुजाओंके प्रतापको देखकर विस्मित हो गये, कुवलयापीड़ हाथीके विशाल दाँतोंको उखाड़कर कन्धेके ऊपर धारणकर रङ्गभूमिमें नृत्य करनेके परिश्रमसे जिनके कपोलोंपर छोटे-छोटे स्वेद(पसीनेके)-बिन्दु शोभा प्राप्त कर रहे हैं, अति उज्ज्वल इन्द्रनीलमणिकी भाँति जिनके श्रीअङ्ग सुशोभित हो रहे हैं, जिन्होंने बलदेव प्रभु और गोप बालकोंके साथ मिलकर

महावीरवेशमें रङ्गभूमिमें प्रवेश करके सभी मल्लगणोंको परास्त कर दिया, ऐसे श्रीकृष्णकी निरन्तर जय हो।

जिनका मृदुहास्य कुन्द-कुसुमकी शोभाका तिरस्कार कर रहा है, नखसमूहसे दीप्तियुक्त जिनके अति सुन्दर चरणकमल देवताओंके आनन्दका वर्धन कर रहे हैं, जिनका वक्षःस्थल मुक्ताहारसे सुशोभित है, जिनके प्रफुल्ल भ्रूयुगलरूपी धनुषके विस्तारके द्वारा अभिनव कन्दर्पदर्प प्रकाशक उनके रूप-लावण्यके दर्शनसे मुग्ध मथुरावासिनी युवतियाँ जिनकी अनुरागिनी हुई हैं, ऐसे श्रीकृष्णकी जय हो।

रङ्गस्थल-विहारी जिनके दर्शन करके शरणागत भक्तोंकी रोग-शोकादि विपतिका नाश हो गया, जो इन्द्रादि देवगणोंके आनन्दका वर्धन करने लगे, जिनकी नयनभङ्गिमाके द्वारा आर्यरमणियोंका पातिव्रत्य च्युत हो गया, वृष्णि एवं अन्धक वंशीय व्यक्तियोंको आनन्द एवं मल्लरमणियोंके मनस्ताप वर्द्धन करनेवाले उन्हीं श्रीहरिकी जय हो।

जिनके इन समस्त भावोंका दर्शन करके कंस भयवशतः विभ्रान्तचित्त हुआ, जिन्होंने इस प्रकार दैत्योंके गर्वको खर्व किया, जो रङ्गस्थलमें कोमल पद-पल्लवके द्वारा व्यग्र होकर परिभ्रमण करनेवाले हैं, परिश्रमके कारण जिनके घुँघराले कुञ्चित केश ललाटके अग्रभागपर लटकने लगे और पुत्रके इस प्रकार परिश्रमको देखकर नन्द और वसुदेव मन-ही-मनमें कष्ट अनुभव करने लगे, कंसके लिये मर्मघाती उन्हीं श्रीहरिकी जय हो।

जो युद्धस्थलमें अतिशय गर्वको प्रकाश करते हुए मल्ल-प्रधान चाणूरके साथ प्रथमतः बाहुयुद्ध करनेमें प्रवृत हुए, जिनका विशाल वक्षःस्थल वनमालासे विभूषित है, नवीन मेघमालाकी भाँति जिनकी अङ्गकान्ति है, उन श्रीहरिकी जय हो।

समस्त दैत्योंके वधके लिये जिन्होंने प्रबल पराक्रमको धारण किया है, जिनके चरणकमलकी प्रभासे कन्दर्पके सौन्दर्यका गर्व चूर हुआ है, उच्च मञ्चसमूहपर अवस्थित लाखों-लाखों भोज एवं दाशार्ह वंशीयगण जिनके विक्रमका दर्शन करके विस्मित होकर उनके प्रति अतिशय भक्ति प्रकाश करने लगे—हे कृष्ण! आप हमारी रक्षा करें, आप चाणूरादि मल्लरूपी हाथियोंके विनाशके लिये सिंह स्वरूप हैं, आप गोपरमणियोंके अधीश्वर हैं, बलदेवजीने आपके बायीं ओर भ्रमणरत मुष्टिक नामक मल्लका वध किया, आपके श्रीअङ्गमें रत्नादिकी शोभा दिखायी देनेपर भी वेणु-शृङ्गादि गोपबालकोचित विभूषण आपको अपूर्व रूपसे शोभायमान कर रहे हैं, हे प्रभो! ऐसे आप हमारी रक्षा करें।

आपने चाणूर-मुष्टिकादि दुर्दान्त दानवोंका वध किया है, दानव विनाशसे निर्भय होकर आपके चरणयुगल नृत्यपरायण हैं, नृत्य करते हुये आपकी अङ्ग भङ्गीके दर्शनसे प्रसन्नचित्त होकर गोपिकागण आपके श्रीअङ्गोंके सौरभरूप मधुका पान करती हैं, आप गोपाङ्गनाओंके नयनोंके मधुपानोचित भ्रमर स्वरूप हैं, सुदाम प्रदत्त पुष्पालङ्कारोंके द्वारा आपके सर्वाङ्ग विभूषित हैं, सुन्दर कुसुममाल्य और सुन्दर वस्त्र धारण करके आप अति उत्तम माधुर्यका विस्तार कर रहे हैं, आपने दुष्ट कंसका वध करके उसे मुक्ति प्रदान की, हे प्रभो! आपने देवकी और वसुदेवजीको कारागृहके बन्धनसे मुक्त किया और आपने उग्रसेन महाराजके लिये समृद्धि-सम्पदसे सम्पन्न साम्राज्यका दान किया, आपकी कीर्ति दिग्दिगन्तमें ध्वनित हो रही है, कुब्जाके द्वारा प्रदत्त अङ्गरागके द्वारा आपके श्यामल श्रीअङ्ग अनुलिप्त हो रहे हैं। हे अनन्यगति, आपसे मेरी यह प्रार्थना है कि इस अधमका संसार सिन्धुसे उद्धार करें।

यदुवंशरूपी कमलके विकासके लिये आप सूर्यस्वरूप हैं। आपने रङ्गक्षेत्रमें भयङ्कर मल्लोंको परास्त करके एक हाथमें खड्ग धारण करके और दूसरे हाथसे सुविशाल मञ्चपर आरूढ़ कंसको केशोंसे पकड़कर उसके मुकुटको भूमिपर गिराकर जगत्-कण्टक कंसका वध किया। हे जगत्पालक! हे करुणामय! आप मेरा इस दुःखसागरसे उद्धार करें॥४२॥

क्रमशः

श्रील भक्तिविनोद ठाकुरका वाणी-वैभव

रागात्मिका-भक्ति

प्रश्न १—रागात्मिका भक्ति किसे कहते हैं?

उत्तर—"विषयी व्यक्तियोंके स्वाभाविक विषयसंसर्गसे ही अतिशयक्रममें उनमें विषयोंके प्रति प्रेमाकारमें 'राग' होता है। सौन्दर्यका दर्शन करनेके लिए जिस प्रकार चक्षु अधीर हो जाते हैं, उसी प्रकार यहाँपर [इन्द्रियोंकी जड़] विषयोंमें 'रञ्जकता' होती है तथा चित्तमें 'राग' रहता है। जब कृष्ण ही उस रागके एकमात्र विषय हो जाते हैं, तब उसे 'रागभक्ति' कहा जाता है। श्रीरूप गोस्वामीने कहा है, इष्टके प्रति स्वारसिकी परमाविष्टताको ही 'राग' कहते हैं। कृष्णभक्ति जब वैसी रागमयी हो जाती है, तब उस भक्तिको 'रागात्मिक भक्ति' कहा जाता है। संक्षेपमें कृष्णके प्रति प्रेममयी तृष्णाको ही रागात्मिका भक्ति कहा जाता है। कृष्णलीलामें लोभ ही रागात्मिका भक्तिमें क्रिया करता है।"

(जैवधर्म, अध्याय २१)

प्रश्न २—रागात्मिका भक्तिकी स्थिति कहाँ है?

उत्तर—"व्रजवासीभक्तोंकी जो रागस्वरूपा भक्ति है, वही मुख्य है, अर्थात् वैसी भक्ति अन्यत्र कहींपर भी नहीं होती। व्रजवासियोंके अनुगत होकर जो भक्ति होती है, उसीका नाम रागानुगा भक्ति है।"

इष्टवस्तुके प्रति स्वाभाविकी परमाविष्टतामयी जो सेवनप्रवृत्ति है, उसीका नाम 'राग' है; कृष्णभक्ति तन्मयी (वैसी रागमयी) होनेपर 'रागात्मिका' नामसे परिचित होती है। व्रजवासियोंके हृदयमें अभिव्यक्तरूपसे रागात्मिका भक्ति विराजमान रहती है। उसी भक्तिकी अनुगता जो भक्ति है, वही रागानुगा भक्ति है।"

(अः प्रः भाः मध्य २२/१४५-१५०)

रागानुगा-भक्ति

प्रश्न १—रागमयी भक्तिका अधिकारी कौन है?

उत्तर—"वैधी-श्रद्धा जिस प्रकार वैधी-भक्तिका अधिकार उत्पन्न करती है, उसी प्रकार लोभमयी श्रद्धा रागात्मिका भक्तिका अधिकार उत्पन्न करती है। व्रजवासियोंकी अपने-अपने रसके भेदसे रागात्मिका निष्ठा ही प्रबला होती है। व्रजवासियोंका श्रीकृष्णके प्रति जैसा भाव है, उसी भावको लक्ष्यकर उस भावको प्राप्त करनेके लिए जिनके हृदयमें लोभ उत्पन्न हो जाता है, वे ही रागानुगा भक्तिके अधिकारी हैं।

(जैवधर्म, अध्याय २१)

प्रश्न २—साधन कितने प्रकारका होता है तथा उसकी प्रणाली क्या है?

उत्तर—"श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वन्दन, दास्य, सख्य तथा आत्मनिवेदन—श्रीमद्भागवतमें ये नौ प्रकारकी साधन-भक्ति लिखी गयी है। इस नौ प्रकार की भक्तिको इसके अङ्ग-प्रत्यङ्ग सहित ग्रहणकर श्रीरूप गोस्वामीपादने चौंसठ प्रकारमें वर्णन किया है। इसमें एक विशेष बात यह है कि साधनभक्ति वैधी तथा रागानुगाके भेदसे दो प्रकारकी होती है। उनमेंसे वैधी भक्ति नौ प्रकारकी होती है। रागानुगा साधनभक्ति (प्रधानतः) केवल ब्रजवासियोंके अनुगत होकर उनकी भाँति मानसिक कृष्ण-सेवा है।"

(जैवधर्म, अध्याय ४)

प्रश्न ३—आत्माकी स्वाभाविकी वृत्ति क्या है?

उत्तर—"जिस प्रकार लोहेको आकर्षण करना चुम्बककी वृत्ति है, तरलता जिस प्रकार जलका गुण है, दहन जिस प्रकार अग्निकी शक्ति है, सङ्कल्प जिस प्रकार मनका धर्म है, अपने-अपने कार्योंमें उपयोगिता जिस प्रकार [विभिन्न] द्रव्योंका स्वभाव है, उसी प्रकार परमेश्वरके प्रति अनुराग ही आत्माकी वृत्ति है। मुक्तावस्थामें जीवकी यह वृत्ति निर्मल तथा पूर्णरूपमें प्रकाशित रहती है, किन्तु बद्धावस्थामें उसमें विकृति आ जाती है।"

(तत्त्वसूत्र १७)

प्रश्न ४—विषयानुराग तथा परानुरागमें क्या अन्तर है?

उत्तर—"शरीरी जीवोंका विषयानुराग ही परानुरागका विकार है। यह वृत्ति निरुपाधि होनेपर 'परानुराग' होता है; किन्तु उपाधि प्राप्त होनेपर उस उपाधिमें वह 'परानुराग वृत्ति' विकृतरूपमें परिणत हो जाती है।"

(तत्त्वसूत्र १७)

प्रश्न ५—उपाधिके भेदसे अनुरागका नाम तथा क्रिया क्या है?

उत्तर—"अनुराग एक ही वृत्ति है। परन्तु उपाधिके भेदसे वह वृत्ति नामान्तरको प्राप्त हो जाती है। 'अर्थ' के प्रति अनुराग होनेपर उसे 'लोभ' कहते हैं, स्त्री-सौन्दर्यके प्रति अनुराग होनेपर उसे 'लाम्पट्य' कहा जाता है, दुःखी व्यक्तिके प्रति प्रकाशित होनेपर उसे 'दया' कहा जाता है, भाई-बहिनके प्रति लगनेपर उसे 'स्नेह' कहा जाता है, उपकारी व्यक्तिके प्रति प्रयुक्त होनेपर वह 'कृतज्ञता' कहते हैं, अनुकूलता होनेपर 'प्रीति' होती है तथा प्रतिकूलता होनेपर वह 'द्वेष' कहलाती है। इस प्रकार एक ही वृत्ति नाना प्रकारकी वृत्तियोंके रूपमें परिणत होकर प्रकाशित हो रही है। बहुत्व ही उसकी उपाधि है। मुक्तजीवोंमें वह वृत्ति निरुपाधि अवस्थामें रहती है, तथापि वह केवल एक ही अवस्थामें अवस्थित रहती है, ऐसी बात नहीं है; अपितु इस निर्मल अनुरागकी अनन्त परिमाणमें उन्नति स्वीकार की जाती है, यही इसकी महिमा और आकर्षण है।"

(तत्त्वसूत्र १७)

प्रश्न ६—विशुद्ध भजनपरायण कौन है?

उत्तर—"जो उपासक भय, आशा(कामना) तथा कर्तव्यबुद्धिके द्वारा ईश्वरका भजन करनेमें प्रवृत्त होते हैं, उनका भजन उतना विशुद्ध नहीं होता। रागमार्गमें जो भगवान्‌के भजनमें प्रवृत्त होते हैं, वे ही यथार्थ साधक हैं।"

(चैतन्य शिक्षामृत १/१)

प्रश्न ७—रागानुगा भक्तिके अधिकारी कौन हैं?

उत्तर—"जिनकी आत्मामें रागतत्त्वकी उपलब्धि नहीं हुई है एवं जो शास्त्रशासनके अनुसार उपासना करनेके इच्छुक होते हैं, वे वैधी भक्तिके अधिकारी

होते हैं। जो हरिभजन करते समय शास्त्रशासनके अधीन होनेकी इच्छा नहीं करते, किन्तु उनकी आत्मामें हरिभजनके प्रति स्वाभाविक राग उत्पन्न हो गया है, वे ही रागानुगा भक्तिके अधिकारी हैं।

(जैवधर्म, अध्याय ४)

प्रश्न ८—रागमयी उत्कण्ठा कैसी होती है?

उत्तर—"प्राचीनाशा, फलपूर्ति तुहुँ पदाम्बुजस्फूर्ति,
सेइ दुहुजन दरशन।
ए जन्मे कि हब मन, ए उत्कण्ठा सुविषम,
विचलित करे मम मन॥"

(कार्पण्य-पञ्जिका, ३२ गीतमाला)

[अर्थात् श्रीश्रीराधाकृष्णके चरणकमलोंकी स्फूर्ति एवं उन दोनोंके दर्शनरूपी मेरी प्राचीन-आशाकी फलपूर्ति, हे मन! क्या इसी जन्ममें होगी? ऐसी सुविषम उत्कण्ठा मेरे मनको विचलित कर देती है।]

प्रश्न ९—रागानुगा भक्तिका मूल क्या है?

उत्तर—"रुचिमूला हि रागानुगा भक्ति"।

"व्रजवासियोंकी सेवाके अनुकूल रुचि ही रागानुगा भक्तिका मूल है।"

(आम्नाय-सूत्र ११६)

प्रश्न १०—रूपानुग भजनमें रसज्ञान आवश्यक क्यों है?

उत्तर—"रूपानुग तत्त्वसार, बुझिते आकांक्षा जाँरा,
रसज्ञान ताँर प्रयोजन।
चिन्मय आनन्द रस, सर्वतत्त्व जाँर वश,
अखण्ड परम तत्त्वधन॥"

(श्रीरूपानुगभजनदर्पण ६, गीतमाला)

[अर्थात् जिनको रूपानुगाके सार तत्त्वको समझनेकी आकाङ्क्षा है, उनके लिए रसतत्त्वका ज्ञान अति आवश्यक है। यही चिन्मय आनन्द रस(तत्त्व) अखण्ड परम तत्त्वधन है, जिसके अधीन समस्त तत्त्व हैं]

प्रश्न ११—वैधी तथा रागानुगा भक्तिमें क्या तारतम्य है?

उत्तर—"वैधी भक्ति धीरगति, रागानुगा तीव्र अति,
अतिशीघ्र रसावस्था पाय।
रागवर्त्म सुसाधने, रुचि हय जाँर मने,
रूपानुग हैते सेइ धाय॥"

(श्रीरूपानुगभजनदर्पण ५, गीतमाला)

[अर्थात् वैधी भक्तिकी गति धीर(धीमी) है जबकि रागानुगा भक्तिकी गति बड़ी तीव्र है, इसलिए वह अतिशीघ्र रसावस्थाको प्राप्त होती है। जिसके मनमें रागमार्गके सुसाधनके प्रति रुचि होती है, वह रूपानुग होनेके लिए धावित अर्थात् चेष्टा परायण होता है]

प्रश्न १२—रागानुगा भक्तोंकी कृष्णसेवा रीति कैसी होती है?

उत्तर—"रागात्मिका भक्तिमें जिनका लोभ हो गया है, वे व्रजवासियोंके कार्यानुसार साधकरूपमें बाह्य एवं सिद्धरूपमें अभ्यन्तर सेवा करते हैं।"

(अः प्रः भाः मध्य २२/१५४)

प्रश्न १३—रागानुग भजनकारीकी इष्टविषयिणी सेवा, व्यवहार, लीलाचेष्टा, पद्धति तथा भाव कैसा होगा?

उत्तर—"विलापकुसुमाञ्जलिमें जैसी 'सेवाकी व्यवस्था' है, वैसी ही सेवा करेंगे एवं 'व्रजविलास-स्तोत्र'में जैसा 'व्यवहार' लिखा गया है, वैसा ही परस्पर व्यवहार करेंगे। 'विशाखानन्दादि' स्तोत्रमें जैसी 'लीलाओं'का वर्णन है, वैसी ही लीलाओंको अष्टकालीय लीलाओंमें दर्शन करेंगे। 'मनःशिक्षा'में जो पद्धति दी गयी है, उसी पद्धतिक्रमसे चित्तको कृष्णलीलाओंमें मग्न करेंगे तथा 'स्वनियममें'जो 'भाव' प्रदर्शित हुआ है, वैसे ही नियमोंमें दृढ़ता करेंगे।

(जैवधर्म)

प्रश्न १४—रागानुगा साधकोंका भगवदनुशीलन कितने प्रकारका होता है तथा उनमें क्या-क्या भेद हैं?

उत्तर—

	प्रकार	विवरण
१	चिद्गत अनुशीलन	(१) प्रीति तथा (२) सम्बन्ध-अभिधेय-प्रयोजनानुभूति।
२	मनोगत अनुशीलन	(१) स्मरण, (२) धारणा, (३) ध्यान, (४) ध्रुवानुस्मृति या निर्दिध्यासन, (५) समाधि, (६) सम्बन्धतत्त्वविचार, (७) अनुताप, (८) यम, (९) चित्तशुद्धि।
३	देहगत अनुशीलन	(१) नियम, (२) परिचर्या, (३) भगवद्भागवतका दर्शन-स्पर्शन, (४) वन्दन, (५) श्रवण, (६) इन्द्रिय-अर्पण, (७) सात्विक विकार, (८) भगवद्दास्यभाव।
४	वाग्गत अनुशीलन	(१) स्तुति, (२) पाठ, (३) कीर्तन, (४) अध्यापन, (५) प्रार्थना, (६) प्रचार।
५	सम्बन्धगत अनुशीलन	(१) शान्त, (२) दास्य, (३) सख्य, (४) वात्सल्य, (५) कान्त; सम्बन्धगत प्रवृत्ति दो प्रकारकी होती है—अर्थात् भगवान्के प्रति प्रवृत्ति तथा भगवज्जनगत प्रवृत्ति।
६	समाजगत अनुशीलन	(१) वर्ण—मनुष्योंके स्वभावके अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र तथा उनका धर्म, पद तथा वार्ता-विभाग। (२) आश्रम—मनुष्योंके अवस्थानके अनुसार सांसारिक अवस्था विभाग—गृहस्थ, ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ, संन्यास, (३) सभा, (४) साधारण उत्सवसमूह तथा (५) यज्ञादि कर्म।
७	विषयगत अनुशीलन	चक्षु आदि इन्द्रियोंके विषयीभूत भगवत्-भावविस्तारक निदर्शन (अदृश्यकाल विज्ञापक घटिका यन्त्रवत्)— (१)नेत्रोंका विषय—श्रीमूर्ति, मन्दिर, ग्रन्थ, तीर्थ-यात्रा, महोत्सव आदि। (२)कर्णका विषय—ग्रन्थ, गीता, वक्तृता तथा कथा आदि। (३)नासिकाका विषय—भगवान्को निवेदित तुलसी, पुष्प, चन्दन, तथा अन्यान्य सुगन्धित द्रव्य। (४)रसनाका विषय—भगवान्को निवेदित सुखाद्य, सुपेय ग्रहणका सङ्कल्प तथा कीर्तन। (५)स्पर्शका विषय—तीर्थवायु, पवित्र जल, वैष्णव शरीर, कृष्णार्पित कोमल शय्या, भगवत् सम्बन्धी संसार-समृद्धिमूलक सती सङ्गिनी सङ्गादि। (६)काल—हरिवासर तथा पर्वदिन इत्यादि। (७)देश—वृन्दावन, नवद्वीप, पुरुषोत्तम तथा नैमिषारण्य आदि।

(कृष्णसंहिता उपसंहार)

[श्रील भक्तिविनोद वाणी-वैभवसे अनुदित]

श्रीश्रीसरस्वती-संलाप

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर 'प्रभुपाद' का वाणी-वैभव

(वर्ष-१६, संख्या-११-१२से आगे)

शास्त्री—दूसरे विष्णुस्वामीके बाद भी क्या और कोई विष्णुस्वामी हुए थे?

श्रील प्रभुपाद—हाँ! द्वितीय विष्णुस्वामीके बाद जब वैष्णवधर्मके प्रचारका नितान्त अभाव हो गया था, तब आन्ध्र विष्णुस्वामी या तृतीय विष्णुस्वामी प्रकट हुए थे। इन्हीं तृतीय विष्णुस्वामीकी गृहस्थ-शिष्यकी परम्परामें बालभट्ट, प्रेमाकर, लक्ष्मणभट्ट आदिने जन्म ग्रहण किया था। लक्ष्मणभट्टके ही पुत्र—श्रीवल्लभभट्ट हैं। ये वल्लभभट्ट ही 'वल्लभाचार्य'के नामसे विख्यात हुए थे।

शास्त्री—वल्लभाचार्य-सम्प्रदायको विष्णुस्वामीके अनुगत कहा जाता है।

श्रील प्रभुपाद—उनके साम्प्रदायिक मत आदि विष्णुस्वामीके विचारसे बहुत पृथक् हुए हैं।

शास्त्री—श्रीवल्लभाचार्य क्या संन्यासी थे?

श्रील प्रभुपाद—वे पहले गृहस्थ थे, अन्त समयमें अर्थात् उनके परलोक-गमनके ३९ दिन पूर्व उन्होंने अपने गुरुभ्राता माध्वाचार्यसे त्रिदण्ड-संन्यास ग्रहण किया था।

शास्त्री—ये माध्वाचार्य कौन हैं?

श्रील प्रभुपाद—श्रीमन्महाप्रभुके त्यागी गोस्वामी-कुलमें गादाधरी शाखाके मूल पुरुष, गदाधर पण्डित गोस्वामी हैं; इन्होंने क्षेत्र-संन्यास अथवा त्रिदण्ड-संन्यास ग्रहण किया था। गदाधर पण्डितके माधव-उपाध्यायके नामसे एक शिष्य थे जो त्रिहूतवासी थे। इन्होंने बादमें पण्डित गोस्वामीसे त्रिदण्ड ग्रहण किया और इनका नाम माध्वाचार्य हुआ। इन्हीं माध्वाचार्यने वेदके पुरुषसूक्तके मङ्गल-भाष्यकी रचना की थी। यदुनन्दनने माध्वाचार्यके द्वारा रचित 'कृष्णमङ्गल' नामक जिस ग्रन्थका उल्लेख किया है, वह इसी पुरुषसूक्तके मङ्गल-भाष्यके सम्बन्धमें ही है। वल्लभाचार्य गदाधर पण्डित गोस्वामीके अनुगत हुए थे, श्रीचैतन्यचरितामृतमें इस बातका वर्णन है।

शास्त्री—वल्लभाचार्य गदाधर पण्डित गोस्वामीके अनुगत हुए थे और गदाधरके शिष्य माध्वाचार्यसे उन्होंने संन्यास ग्रहण किया था, इस बातको क्या वल्लभ-सम्प्रदायके लोग स्वीकार करते हैं?

श्रील प्रभुपाद—यदुचन्द्रके 'वल्लभ-दिग्विजय' ग्रन्थमें जो माधव-सम्प्रदायी माधवज्योति त्रिदण्डीसे विष्णुस्वामी-मतके अनुसार त्रिदण्ड-संन्यास ग्रहणकी बात वल्लभाचार्यके सम्बन्धमें लिखी गयी है, उसके द्वारा गदाधर पण्डित गोस्वामी प्रभुके शिष्य—माध्वाचार्यको ही समझा जाता है, इस विषयमें कोई सन्देह नहीं है।

शास्त्री—वल्लभ-भट्टके आविर्भावकालके सम्बन्धमें आपने क्या स्थिर किया है? वल्लभ-भट्ट क्या आयुमें महाप्रभुसे बड़े हैं अथवा छोटे हैं?

श्रील प्रभुपाद—वल्लभभट्टने महाप्रभुके आविर्भावके सात वर्ष पहले अर्थात् चौदह सौ शकाब्दमें जन्म ग्रहण

किया था। उन्होंने १४५२ शकाब्दमें त्रिदण्ड-संन्यास ग्रहण करके परलोक गमन किया था।

शास्त्री—विल्सन साहबके मतसे 800 A.D. से पहले कोई पुराण नहीं था—हम तो 1500 B.C. तक देखते हैं। तब मैंने विचार किया कि मैं जिस थ्योरीको मान रहा था, वह सब विपरीत हो जायेगी। जब कोई पुनः चर्चा करेंगे, तब वे मेरे लिए बोलेंगे,—'वे जो काम करते हैं, उनका गलत ही होता है।'

श्रील प्रभुपाद—Mental Speculationist का सिद्धान्त, अनुमान—सबकुछ परिवर्तनके योग्य हैं। पुराण—नित्य, सनातन वस्तु हैं। अमलपुराण-समूहके आविर्भाव और तिरोभाव-मात्रको ही स्मृतिशास्त्रने गान किया है। जो श्रौतपन्थाको त्यागकर अश्रौत अनुमान या और प्रत्यक्ष मतके अनुसार चलते हैं, वे नित्य सनातन और पुरातन सूर्यको अभीके २-१ घण्टा अथवा २-३ मिनट पूर्वका सूर्य मानकर भ्रान्त होते हैं। छोटेसे छिद्रके भीतरसे jockey [horse rider] को दौड़कर जाते हुए देखकर वे jockey की उसी मुहूर्तमें जन्म और मृत्युकी कल्पना करते हैं। किन्तु श्रुतिशास्त्रोंने इस सबका निराकरण किया है। आनन्दतीर्थ, लक्ष्मणदेशिक और श्रीचैतन्यके दासानुदासगणोंने वर्धमान ज्ञातीपुत्रके द्वारा प्रचारित निरीश्वर नायक-पूजावाद और सिद्धार्थके द्वारा अविष्कृत निरीश्वर सेवारहित तपोवादकी कुयुक्ति तकका खण्डन किया है। जगत्में प्रच्छन्न-बौद्धवादके दूषित बीजाणु नाना प्रकारसे प्रवेश करके लोगोंका अहित कर रहे हैं।

शास्त्री—जगत्के सभी धर्म ही न्यूनाधिक बौद्धधर्मसे उत्पन्न और परिपुष्ट हुए हैं।

श्रील प्रभुपाद—यही सहजिया मत है। किन्तु हम यह दिखा रहे हैं कि एक सनातन भागवतधर्मकी विकृत अवस्थासे जगत्में बौद्धादि मतोंकी सृष्टि हुई है। इसको हम सभी प्रकारसे प्रमाणित कर सकते हैं। बुद्ध-विष्णुके विपथगामी व्यक्तिगण ही अवैदिक बौद्ध हो गये थे। जिस प्रकार श्रीचैतन्यकी शिक्षाके विपथगामी सम्प्रदाय परवर्तीकालमें आउल, बाउल, सहजिया आदि नाम धारण करके श्रीचैतन्यकी दुहाई देते हैं, उसी प्रकार श्रीमद्भागवतमें कहे गये विष्णुके दशावतारोंमें-से एक बुद्धके विपथगामी शिष्य अश्रौत बौद्ध या प्राकृत सहजिया हुए हैं। हम भी बुद्धके अवतारी श्रीकृष्णके दासरूपसे बौद्ध हैं। तथापि हम बिद्ध बौद्ध, अश्रौत बौद्ध या प्राकृत-सहजिया नहीं हैं। श्रीमद्भागवतके ऋषभदेवकी दुहाई देकर भागवत-धर्मके साथ प्रतिस्पर्धा करनेके लिये वर्धमान ज्ञातीपुत्रके दलने जैनधर्मकी सृष्टि की थी। निरीश्वर नायक-पूजावाद या hypothesis का आश्रय करके कृत्रिम निरीश्वर नीतिने जिन सब मतवादोंको पुष्ट किया है, उनके साथ सनातन भागवत-धर्मका या वैष्णवधर्मका कोई सम्बन्ध नहीं है। श्रीमध्वके १६वें अधस्तन और मध्वाचार्यके द्वितीय-स्वरूप सौदेमठके स्वामी वादिराजतीर्थने साधारण युक्तिके बलसे एकदिन बौद्धवादकी व्यर्थताका प्रदर्शन किया था। उनके ग्रन्थ 'युक्तिमल्लिका'के पाँचवें सौरभमें इन सब मतवादोंका खण्डन करके सनातन-वैष्णवधर्मकी सुगन्धका विस्तार किया गया है। हमने उसी युक्तिमल्लिका ग्रन्थका प्रकाश किया है।

शास्त्री—मैंने युक्तिमल्लिका ग्रन्थका नाम पहली बार सुना है। ग्रन्थकी किसने रचना की, यह बतायेंगे?

श्रील प्रभुपाद—वादिराज स्वामीने।

शास्त्री—ये कितने दिन पहले हुए थे?

श्रील प्रभुपाद—आजसे प्रायः साढ़े तीन सौ साल पूर्व इनका प्रकटकाल है। कोई-कोई कहते हैं कि ये श्रीचैतन्यदेवके समसामयिक हैं। ये सौदेमठमें स्थित वागीशतीर्थसे दीक्षित होकर श्रीमध्व-मतके अद्वितीय प्रचारक हुए थे। इन्होंने शैवसिद्धान्त और जैनमतके खण्डनमें अपनी युक्तिमल्लिकामें जिन सब युक्तियोंको प्रदर्शित किया था, उससे बौद्धवादादि मतसमूह परास्त हुए हैं।

[म.म. पण्डित शास्त्री महाशय वादिराजस्वामीका नाम श्रवण करनेपर अफरेत् साहबके catalogue को देखने लगे। उसमें वादिराजस्वामीका नाम और युक्तिमल्लिका ग्रन्थका नाम उन्होंने देखा। 'युक्तिमल्लिका' शब्दका अनुसन्धान करनेपर देखा कि उक्त शब्दके साथमें एक जिज्ञासा-चिह्न (?) है। उससे यह समझा जाता है कि युक्तिमल्लिकाके सम्बन्धमें ठीक-ठीक विवरण अफरेत् साहबको प्राप्त नहीं हुआ था।]

शास्त्री—आपके द्वारा प्रकाशित युक्तिमल्लिका ग्रन्थको मैं अवश्य ही देखना चाहता हूँ।

श्रील प्रभुपाद—मैं उस ग्रन्थको आपको भेज दूँगा।

शास्त्री—मैं जानता था कि कुमारिल भट्ट, शङ्कराचार्य आदिने विचारयुक्तिपरक ग्रन्थ लिखे हैं। किन्तु भक्तिप्रिय वैष्णव-सम्प्रदायके इस प्रकारसे परमत खण्डन-विषयक ग्रन्थ वास्तवमें ही अभिनव हैं। आपने इस प्रकार विचारपरक ग्रन्थोंको प्रकाशित करके साहित्य जगत्का कल्याण किया है।

श्रील प्रभुपाद—केवलमात्र वैष्णव आचार्यगणोंके ही इतने अधिक दार्शनिक ग्रन्थ हैं जो अन्य साम्प्रदायिकगणोंके नहीं हैं। फैज़ाबादकी लाइब्रेरी छोटी होनेपर भी उसमें ऐतिह्य (ऐतिहासिक) ग्रन्थ बहुत संख्यामें संग्रहित किये गये हैं। मैंने उस लाइब्रेरीसे कुछदिनों तक कुछ तथ्य संग्रह किये थे।

शास्त्री—फैज़ाबादके रामशरणदास मेरे छात्र थे। मैंने उनको एम.ए. पास करवाया था। वे लक्ष्मण (लखनऊ) यूनिवर्सिटीमें संस्कृतके अध्यापक हैं। अच्छा, श्रीचैतन्यदेव पाण्डरपुरमें कब गये थे?

श्रील प्रभुपाद—१४३४ शकाब्दमें। श्रीमन्महाप्रभुके बड़े भाई विश्वरूपके अप्रकट-स्थान पाण्डरपुरका दर्शन करने मैं भी गया था। आपने यह सुना होगा कि श्रीचैतन्यदेवने भारतके जिन सब स्थानोंमें पदार्पण किया था, उन सब स्थानोंपर हमने उनकी पुण्यस्मृतिके चिह्न-स्वरूप पदाङ्क-स्थापन और वहाँ महाप्रभुके आगमनकी तारिखका निर्देश कर दिया है।

शास्त्री—इसके द्वारा आपने ऐतिहासिकगणोंको भी बहुत सुविधा प्रदान कर दी है।

श्रील प्रभुपाद—अभी भी पाण्डरपुरमें श्रीचैतन्यपादपीठकी स्थापना नहीं हुई है। वहाँपर तुकाराम, नामदेव, ध्यानेश्वर या ज्ञानेश्वर आदि अभङ्ग-[व्यवधानरहित निरन्तर भजनोंके] रचयिता भक्तगण वास करते थे। इनकी भजन-वेदीमें विठोवा या विट्ठलदेव की कथा प्रचारित रहती है। पुरन्दर दास, जगन्नाथ दास, कनक दास, व्यासराय, युक्तिमल्लिकाके वादिराज आदि पारमार्थिक कविगणोंने कन्नड़ भाषामें विठोवा देवके सम्बन्धमें अनेक गीतोंकी रचना की है। मध्वसम्प्रदायके आचार्योंमें जो भजनानुराग प्रदर्शन या भजन-गीति-रचनाके द्वारा अनुराग प्रदर्शन करते हैं, वे अपने आपको 'दासकुट' श्रेणीके अन्तर्गत कहकर अपना परिचय देते हैं। और मध्वसम्प्रदायमें जो संस्कृत-शास्त्रकुशल और प्रतिवादीका दमन करनेमें पराक्रमशाली होकर आचार्यका कार्य करते हैं, वे स्वयंको 'व्यासकुट' श्रेणीके अन्तर्भुक्त कहकर परिचय देते हैं।

शास्त्री—आपके सम्प्रदायमें पदावली-कर्त्ता, महाजन और शास्त्रकर्ता गोस्वामी आचार्यगणोंके मतसे दासकुट और व्यासकुट क्या मध्वाचार्यके समयसे ही आरम्भ हुआ है?

श्रील प्रभुपाद—भजनानन्दी और तत्त्वविचारके भेदसे दासकुट और व्यासकुट, दो श्रेणियाँ है। प्राकृत सहजियागण जिस प्रकार 'भजनानन्दी' कहनेसे तत्त्व-अनभिज्ञ, मूर्ख, व्याभिचारी सहजियागणको ही समझते हैं, यह उस प्रकार नहीं है। मूर्ख, लम्पट, सहजिया कभी भी भजनानन्दी नहीं हैं। व्यासतीर्थके समयसे ही मध्व-सम्प्रदायमें दासकुट और व्यासकुट—ये दो श्रेणियाँ प्रचारित हुई हैं।

[श्रीसरस्वती-संलापसे अनुदित]

क्रमशः

श्रील भक्तिप्रज्ञान केशव
गोस्वामी महाराजका वाणी-वैभव

श्रीश्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजकी पत्रावली

(पत्र—१५)

अष्टग्रह-समावेशरूप विपदामें भी भक्तोंको हरिकीर्तन करते हुए हरिभजन करना चाहिए

श्रीश्रीगुरु-गौराङ्गौ जयतः

श्रीउद्धारण गौड़ीय मठ,
चौमाथा, पोः—चुँचुड़ा (हुगली)
दिः—३/१/१९६२

स्नेहास्पदेषु—

------! नामका तुम्हारा inland पत्र देखा। अष्टग्रहके समावेशसे वैकुण्ठवासियोंका कुछ लेना-देना नहीं होता। साधक जीवमात्रको ही सर्वदा हरिकीर्तन करना चाहिए। अष्टग्रहके समावेशमेंसे किसी एक उपलक्ष्यका भी आगमन होनेपर हरिकीर्तनका सुयोग जानकर प्रचुर आनन्दपूर्वक हरिकीर्तन तथा हरिभजन करना चाहिए।

पृथ्वीके लोग चिरकालसे ही हरिकीर्तनके विरोधी हैं। भगवान्‌की इच्छासे ग्रह-उपग्रह हरिकीर्तन-विरोधियोंको दण्ड देनेके लिए उन्हें भयभीत करते रहते हैं। उस समय पापी तथा अपराधी लोग भगवान्‌के शासनसे बचनेके लिए भगवान्‌का आनुगत्य दिखानेकी चेष्टा करते हैं। मङ्गलमय भगवान् सन्तुष्ट होकर ग्रहोंके श्राप [दण्ड] से उनकी रक्षा भी करते हैं। यह [भगवान्‌का आनुगत्य] उनका रक्षाकवच होनेके कारण पुनः ऐसी दुर्घटना [परिस्थिति] घटित होते ही हरिप्रीतिमूलक कार्यमें उन लोगोंकी स्थायीचेष्टा प्रकाशित हो जाती है।

हरिविरोधी कार्य देखकर हमारा मन दुःखित हो जाता है। अतः भगवान् स्वयं ही हमारे मनको शान्त करनेके लिए जगत्‌में विपद-आपद भेज देते हैं। तब उन विपदाओंसे बचनेके लिए विश्ववासी कर्मी-ज्ञानी-सम्प्रदायके लोग विपद्-भञ्जन श्रीहरिका भजन करनेकी चेष्टा प्रदर्शन करते हैं। ऐसे सुयोगपर कर्म-ज्ञानकी चेष्टाका ह्रास होनेपर भक्तोंको सेवाचेष्टाका सुयोग प्राप्त होता है।

बहिर्मुख व्यक्तियोंके लिए जो विपदा होती है, अन्तर्मुख व्यक्तियोंके लिए वही सम्पदा है। अतः ग्रहसमावेशके द्वारा भगवान्‌के भक्तोंको सेवाका सुयोग मिलता है। स्मार्त बहिर्मुख लोग भी 'भगवान् मधुसूदनके अतिरिक्त अन्य कोई भी विपत्तियोंसे उद्धार नहीं कर सकता' ऐसा जानकर भगवान्‌के भजनकी चेष्टा करते हैं। उस समय भगवद्-भजनके विरोधी व्यक्तियोंकी भी भगवान्‌के अनुकूल चेष्टा देखकर भगवान्‌के भक्तगण अति आनन्दपूर्वक नामयज्ञ या हरिकीर्तनयज्ञ करते हैं। हम वही करेंगे।

वहाँके समस्त भक्तोंको यह पत्र पढ़कर सुनाना तथा इसीके अनुसार कार्य करनेका उपदेश प्रदान करना। मैं आगामी कल मथुरा जा रहा हूँ। वहाँसे जयपुर होकर २४ जनवरीको नवद्वीप लौट आऊँगा। अपने कुशल-मङ्गलका समाचार भेजना। इति—

नित्यमङ्गलाकांक्षी—
B. P. Keshava
श्रीभक्तिप्रज्ञान केशव

(श्रीगौड़ीय पत्रिका—वर्ष-४२, संख्या-१ से अनुदित)

श्रीगौड़ीय-पत्रिकाका सत्ताईसवाँ वर्ष

(वर्ष-१७, संख्या-१-४ से आगे)

श्रील भक्तिवेदान्त वामन गोस्वामी महाराजका वाणी-वैभव

भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र ही समस्त ईश्वरोंके ईश्वर और सर्वाराध्य तत्त्व हैं

एकमात्र चिन्मय भास्कर(सूर्य) श्रीकृष्णचन्द्र ही उनके द्वारा सृष्ट अनन्तकोटि जीवसमूह और विश्व-ब्रह्माण्डके अज्ञानरूपी अन्धकारको दूर करनेवाले हैं। भक्तगण भक्तियोगसे ही सच्चिदानन्दविग्रह सर्वाकर्षक श्रीकृष्णचन्द्रका दर्शन प्राप्त करते हैं। अमृतत्व, नित्यधर्मरूप प्रेम और ब्रजरस उन अखिलरसामृत-मूर्त्ति श्रीकृष्णस्वरूपका आश्रयकर विद्यमान हैं। वे ही अवतारोंके मूलपुरुष और समस्त कारणोंके कारण हैं। वे परमेश्वर परात्परतत्त्व हैं और अचिन्त्य शक्तिसे युक्त हैं। भगवत्-निष्ठ साधुगण उन निर्गुण-सविशेषतत्त्व श्रीभगवान्‌के परमपदका दर्शन और सेवा करते हैं। वे ही सर्ववेद-वेद्य (समस्त वेदोंके द्वारा जाननेवाले) भगवान् हैं, वेदान्तकर्त्ता हैं और वेदवित् (वेदोंको जाननेवाले) हैं। जिनके चरणधौत जलसे नदीश्रेष्ठा गङ्गाकी उत्पत्ति हुई है, ब्रह्मा द्वारा जो [जल] अर्घ्यस्वरूप प्रदत्त है तथा जिस [नदी] को मस्तकपर धारण करके शिव शिवत्व प्राप्तकर त्रिजगत्‌को पवित्र कर रहे हैं, इस जगत्‌में उन श्रीहरिके अतिरिक्त कौन 'भगवत्' शब्दवाच्य हो सकते हैं एवं कौन जीवकी वासनारूपी हृदयग्रन्थिका नाश करके उसे प्रेमानन्दका अधिकारी बना सकते हैं? अतः जो लोग आधिकारिक देव-देवियोंको स्वतन्त्र ईश्वर-ईश्वरी मानकर उनकी उपासना करते हैं, वे प्रतीक-उपासक, अहंग्रह-उपासक, विश्वरूप-उपासक हैं, वे सभी न्यूनाधिक नास्तिक हैं।

श्रीमन्मध्वाचार्यके सिद्धान्त और नौ-प्रमेय

श्रीमन्मध्वाचार्यके सिद्धान्तोंके अनुसार—(१) श्रीभगवान् विष्णु ही सर्वोत्तम हैं, (२) जगत् सत्य है, (३) ईश्वर, जीव और जड़ परस्परमें पञ्चभेद नित्य हैं, (४) जीवसमूह श्रीहरिके अनुचर हैं, (५) जीवोंकी परस्पर योग्यतामें तारतम्य [अन्तर] है, (६) जीवके स्वरूपानुगत धर्मकी अभिव्यक्ति ही 'मुक्ति' है, (७) निर्मल अहैतुकी भक्ति ही आत्मधर्मकी अभिव्यक्तिका साधन है, (८) शब्द, अनुमान और प्रत्यक्ष—ये तीनों ही प्रमाण हैं, (९) श्रीहरि ही एकमात्र अखिल आम्नाय-वेद्य [गुरु-परम्परासे प्राप्त वाणी द्वारा जाने जाते] हैं—यही नौ प्रमेयोंके रूपमें स्वीकृत है। गौड़ीय वेदान्तकेशरी श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुने भी बताया है—'भगवान् श्रीकृष्णचैतन्यचन्द्रने मध्वाम्नाय स्वीकार करते हुए इन नौ प्रमेयोंका उपदेश दिया है।'

श्रीमन्महाप्रभुके द्वारा ब्रह्म-माध्व सम्प्रदायको स्वीकार करनेका कारण और अचिन्त्य-भेदाभेद सिद्धान्तका स्थापन

श्रील श्रीधरस्वामीने (भा. १२/१३/१९) श्लोककी 'भावार्थदीपिका' टीकामें लिखा है—"श्रीभागवतसम्प्रदाय-प्रवर्त्तकरूपेण भगवद्ध्यान-लक्षणं मङ्गलमाचरति, —कस्मै ब्रह्मणे।" इससे हम स्पष्ट जान सकते हैं कि 'ब्रह्मसम्प्रदाय' नामसे एक सम्प्रदाय सृष्टिके समयसे चलता आ रहा है। उस सम्प्रदायमें गुरुपरम्परासे प्राप्त वेदसंज्ञिता विशुद्धा वाणीने ही भगवद् धर्मको संरक्षित किया है। ब्रह्म-सम्प्रदाय ही श्रीकृष्णचैतन्य-दासगणोंकी गुरुप्रणाली है। श्रीमध्वके मतमें जिस सच्चिदानन्द विग्रहको स्वीकार किया गया है, वह ही अचिन्त्य-भेदाभेदका मूल होनेके कारण श्रीमन्महाप्रभुने मध्व-सम्प्रदायको स्वीकार किया है। साक्षात् परतत्त्व श्रीचैतन्यमहाप्रभुने अपनी सर्वज्ञताके बलपर उन समस्त[चार आचार्योंके] मतोंमें अभावको पूर्ण करते हुए श्रीमध्वके 'सच्चिदानन्द नित्यविग्रह', श्रीरामानुजके 'शक्तिसिद्धान्त', श्रीविष्णुस्वामीके 'शुद्धद्वैतसिद्धान्त' एवं श्रीनिम्बादित्यके 'चिन्त्यद्वैताद्वैत-सिद्धान्त' को निर्दोष और सम्पूर्ण करते हुए अपने अचिन्त्यभेदाभेदात्मक अति विशुद्ध वैज्ञानिक मतको कृपापूर्वक जगत्को अर्पण किया है। श्रीमन्मध्वाचार्यके द्वारा भेदको 'नित्य' कहकर स्थापित करनेके कारण अचिन्त्यभेदाभेद मत ही यथार्थ है, यह निश्चित है।

श्रीकृष्णचैतन्यमहाप्रभु कदापि शङ्कर-सम्प्रदायके अनुगत नहीं थे, इसका यथेष्ट प्रमाण है। श्रीगौरसुन्दर कलियुगमें सात्वत चार सम्प्रदायोंमें अन्यतम श्रीब्रह्म-माध्व-गौड़ीय सम्प्रदायको स्वीकार करेंगे, इसलिए जगद्गुरु होकर भी उन्होंने श्रील ईश्वरपुरीपादको 'दीक्षागुरु' के रूपमें वरण करनेकी लीला प्रदर्शित की है। उनसे 'दशाक्षर-मन्त्र' ग्रहण करनेकी लीलाके बाद श्रीमन्महाप्रभुने जिस प्रकार आत्मप्रकाश किया था, उससे भी जाना जाता है

कि प्रेम-प्रचारके लिए ही उन्होंने मध्व-सम्प्रदायको स्वीकार किया है। मध्व-मत केवलाद्वैत-वादको अधिक स्पष्टरूपमें खण्डन करता है, इसलिए श्रीमन्महाप्रभुने शुद्धद्वैतवादरूप मध्व-मतको स्वीकार किया है। उन्होंने ही गौड़ीय-वैष्णवधर्मके सनातनत्व और सत्-साम्प्रदायिकताको स्थापन तथा प्रमाणित किया। श्रीमन्महाप्रभुके द्वारा मध्वमत स्वीकार करनेके कारण ही श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामीने श्रीमाधवेन्द्रपुरीपादको प्रेमतरुका 'प्रथम अङ्कुर' कहा है। श्रील जीव गोस्वामी पादने भी अपने सन्दर्भमें श्रीमन् मध्वाचार्यको 'वृद्ध वैष्णव' कहकर सम्मान प्रदर्शन किया है।

श्रीकोल पर्वत ब्रजपत्तन तथा कोलद्वीपमें साधनाका समन्वय करते हुए भक्त-भगवान्का जयगान

हमने पहले ही चर्चा की है कि सह्याद्रि या कोल-पर्वत द्वारा परिवेष्टित पुण्यभूमि परशुराम-क्षेत्रके निकट उडुपीमें श्रीमध्वाचार्यपाद आविर्भूत हुए। इस कलियुगमें क्षिति(जगत्)पावन श्री-ब्रह्म-रुद्र-सनक—ये

चार वैष्णव-सम्प्रदायाचार्य जगत्का असीम कल्याण करेंगे, ऐसा शास्त्रोंमें कहा गया है। स्वयं भगवान् श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभुने इन [चारों आचार्यों] के द्वारा प्रचारित तत्त्व, विशेषतः श्रीमध्व-विचारको स्वीकार करते हुए पूर्णाङ्ग रूपमें 'अचिन्त्यभेदाभेद सिद्धान्त' स्थापन किया है। इसलिए इनके सम्मानके लिए श्रीरूपानुग-गौड़ीय-वैष्णवचार्य-केशरी जगद्गुरु ॐ विष्णुपाद श्रीमद्भक्तिसिद्धान्त सरस्वती प्रभुपादने श्रीधाम मायापुर ब्रजपत्तन (श्रीचन्द्रशेखर आचार्य भवन) में २९ चूड़ायुक्त विशाल श्रीमन्दिरमें श्रीश्रीगुरु-गौराङ्ग-गान्धर्विका-गिरिधारीजीके साथ सम्प्रदाय-प्रवर्त्तकों सहित चारों आचार्योंको भी प्रतिष्ठित किया है। मेरे परमाराध्यतम श्रीगुरुदेव ॐ विष्णुपाद श्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजने भी अपने अभीष्टदेव [श्रीगुरुदेव] का अनुसरण करते हुए नवधाभक्तिके पीठ स्थानस्वरूप श्रीनवद्वीपधामके अन्तर्गत इस कोलद्वीप (गिरिराज गोवर्धन)में नवचूड़ायुक्त गगनचुम्बी श्रीमन्दिरमें श्रीश्रीगुरु-गौराङ्ग-राधाविनोद-विहारीजीके साथ सम्प्रदाय-प्रवर्त्तक श्रीलक्ष्मी, ब्रह्मा, चतुःसन् और रुद्रके साथ यथाक्रमपूर्वक श्रीरामानुजाचार्य, श्रीमध्वाचार्य, श्रीनिम्बादित्याचार्य और श्रीविष्णुस्वामी—इन चारों आचार्योंको निर्दिष्ट चार कोनों पर स्थापन करते हुए उनके गौरवको बढ़ाया है। सुखकी बात है कि श्रीगुरुदेवके अन्तरङ्ग विश्रम्भ-सेवकोंने श्रीमन्दिरकी दीवारों पर दशावतार मूर्त्तियोंका प्रकाश तथा श्रीमन्दिरका विविध प्रकारसे संस्कार करते हुए श्रीलगुरुदेवके मनोऽभीष्ट पूरण और सब प्रकारसे सेवाको उज्ज्वल करते हुए मुझे कृतज्ञताके बन्धनमें बाँध दिया है। विशेष लक्ष्य करनेकी बात है कि गौड़ीय-वैष्णव-सम्प्रदायके पूर्वाचार्य श्रीमदानन्दतीर्थ मध्वमुनि 'कोल'-पर्वतसे ब्रजपत्तन, एवं वहाँसे अभिन्न-गोवर्धन कुलिया पहाड़ 'कोल'द्वीपमें आविर्भूत होकर विराजमान हुए हैं। प्रति वर्ष ही श्रीरूपानुग-गौरवाणी-विनोद-धारामें स्नात गौड़ीय वैष्णवगण

श्रीमन्मध्वाचार्यका शुभ विजयोत्सव पालन करते हुए उनकी शुभाविर्भाव-तिथिकी आराधना करते हैं। अन्तमें हम गुरु-गौड़ीयके आनुगत्यमें आश्रय-विषय श्रीभगवान्की वन्दना गान करते हुए वक्तव्य समाप्त कर रहे हैं—

अधिक बन्धं रन्धय बोधात्
छिन्धि पिधानं बन्धुरमद्धा।
केशव केशव शासक वन्दे
पाशधरार्चित शूरिवरेश॥

[हे केशव! शासक! शूरि-वरेश्वर! आपकी वन्दना करता हूँ। आप प्रज्ञान प्रदान करते हुए हमारे प्रबल संसार-बन्धनका नाश करें एवं विचित्र अविद्या-आवरणका छेदन करें।]

(श्रीगौड़ीय पत्रिका, वर्ष-२७, संख्या-१से अनुदित)

श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजके पत्रामृत

(पत्र—६)

भगवद्-भक्ति शोक-मोह-भयको

श्रीश्रीगुरु-गौराङ्गौ जयतः

श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ
पो. मथुरा (उ. प्र.)
ताः २/८/१९८७

बेटी मधु!

मेरा स्नेहाशीष ग्रहण करना। तुम्हारा पत्र मिला है। विभिन्न सेवा कार्योंमें व्यस्त रहनेके कारण इच्छा होते हुए भी पत्र [का उत्तर] नहीं दे पानेके कारण स्वयं भी अनुतप्त हूँ।

तुमने अध्यापन कार्य आरम्भ कर दिया है, तुम्हारी Principal बहुत अच्छी है तथा संस्कृत विषयका अध्ययन कर रही है—यह संवाद बहुत ही सन्तोषजनक है। सबसे सन्तोषजनक यह बात है कि तुम्हारे घरवालोंने तुम्हारे इस कार्यको विरोध नहीं किया है। करुणावरुणालय श्रीकिशोर-किशोरीजीके अनुग्रहसे असम्भव भी सम्भव हो जाता है। मैं सदा-सर्वदा तुम्हारे लिए चिन्तित रहता हूँ कि तुम्हें नित्यानन्द एवं शान्ति कैसे प्राप्त हो।

तुमने शोध-पुस्तिकामें भागवत, भगवान्, भक्त एवं भक्ति तत्त्वका जैसा विशुद्ध विवेचन प्रस्तुत किया है—उसमें प्रतिष्ठित होनेका प्रयत्न करना। श्रीनारद चरित्र, भरत, चित्रकेतु, कपिल-देवहूति, भवाटवी आदि उपाख्यानोंकी पारमार्थिक प्रौढ़ शिक्षाओंको जीवनमें उतारनेका प्रयत्न होना आवश्यक है। भगवद्-भक्ति तो शोक-मोह-भयको दूर करनेवाली है, वह सच्चिदानन्द प्रदायनी एवं भगवद्-वशकारिणी है। तुम उसी भक्तिपथ पर आरूढ़ होने जा रही हो—फिर शोक, मोह, भय, चिन्ताका अवकाश कहाँ? तुम अपनेमें श्रीकिशोरीजीकी

दूर करनेवाली है

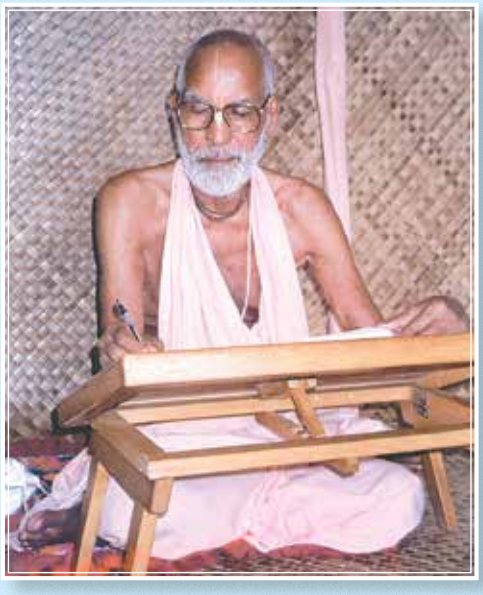

एक सरल, भावुक, विदग्धा किङ्करी—सेविकाकी भावना रखना। नियमित रूपमें श्रीहरिनामके साथ-साथ उनकी भावमयी सेवामें अपनी सुध-बुध भी खो देना। तुम्हारा जीवन अति उदात्त [महान], प्रेममय और सरस हो उठे।

अधिक क्या, मेरा स्नेहाशीष ग्रहण करना, चारुको भी मेरा स्नेहाशीष देना। पत्र द्वारा कुशल संवाद देना।

तुम्हारा नित्य मङ्गलाकांक्षी

Swami B.V. Narayan

श्रीभक्तिवेदान्त नारायण

—सम्पादकीय निवेदनः श्रीश्रीभागवत-पत्रिकाके सहृद पाठकोंसे विनम्र निवेदन है कि यदि आपमें-से किसीके पास श्रील गुरुदेव—श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजके द्वारा हिन्दी अथवा बङ्गला भाषामें लिखित पत्र हैं, तो कृपया उस पत्र//पत्रों को scan करवाकर अथवा उनकी स्पष्ट photo लेकर bhagavata.patrika@gmail.com पर e-mail करें या ७८९५९३९३१६ no. पर whatsapp करें। हम श्रील गुरुदेवके द्वारा आपको भेजे गए पत्रोंको श्रीश्रीभागवत-पत्रिकामें क्रमशः प्रकाशित करेंगे।

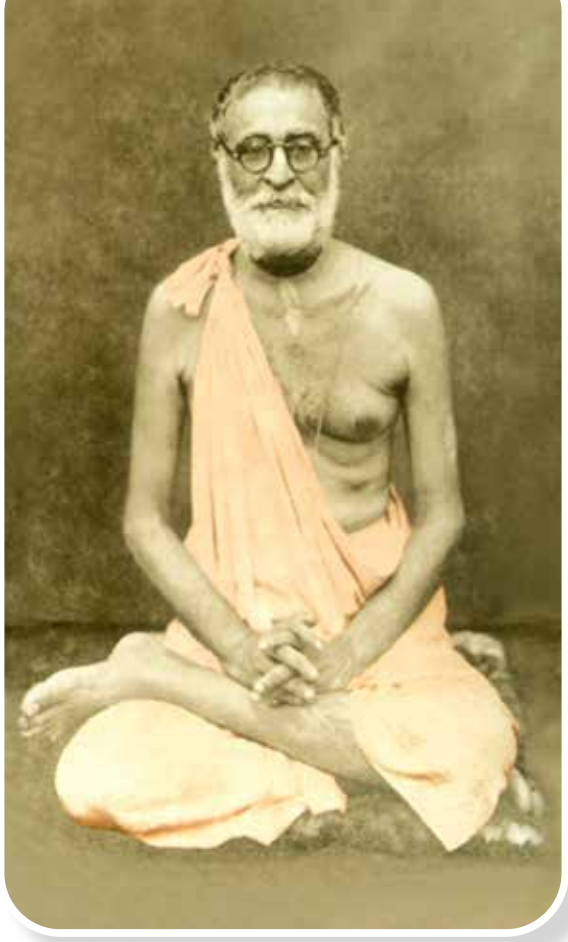

जगद्गुरु श्रील और उनका

अवरुद्ध-प्रायः धर्मको गति प्रदान करनेवाले भगवद्-पार्षद

धर्मकी गति सदैव एक ही समान अबाधितरूपसे प्रवाहित नहीं होती। धर्मके प्रवाहको रोकनेवाले अनेक प्रतिबन्ध समय-समयपर उत्पन्न हुआ करते हैं। इन सामयिक प्रतिबन्धोंको हटाकर धर्मके रुद्ध-प्रायः प्रवाहको गतिशील बना देनेके लिये समय-समयपर करुणासिन्धु भगवान् स्वयं आविर्भूत होते हैं अथवा अपने प्रिय पार्षदोको भूतलपर आविर्भूत कराते हैं। भगवान् एवं उनके प्रिय पार्षदोंके भुवनमङ्गल आविर्भावके विषयमें यह साधारण नियम रहनेपर भी समस्त अवतारोंके मूलाधार अवतारी पुरुष स्वयं-भगवान् श्रीकृष्ण और उनके प्रिय पार्षदोंके आविर्भावमें एक विशेष रहस्य होता है, जिसमें अवरुद्ध-प्रायः धर्मको गति-प्रदान करनेका कार्य भी गौणरूपमें युक्त रहता है।

पूर्व-अवस्था

श्रीचैतन्यमहाप्रभुने आविर्भूत होकर जिस अनर्पितचरीं (जड़जगतमे चिरकालसे अनर्पित) कृष्ण-प्रेमकी धारा—शुद्धभक्तिकी धारा प्रवाहित की थी, उनकी अप्रकट लीलाके पश्चात् उस शुद्धभक्ति धाराको छह गोस्वामियोंने, श्रीनिवास आचार्य और श्रीनरोत्तम ठाकुरने, श्रीविश्वनाथ चक्रवर्ती एवं श्रीबलदेव विद्याभूषणने क्रमशः संरक्षण देकर श्रीचैतन्य मनोऽभीष्टको पूर्ण किया। परन्तु श्रीबलदेव विद्याभूषणके अप्रकटके पश्चात् शुद्धभक्तिने कुछ कालके लिये अन्धकार युगमें प्रवेश किया था। उस समय लोग श्रीचैतन्य महाप्रभु और उनके द्वारा प्रचारित भक्ति-धर्मके सम्बन्धमें भूल धारणा करने लगे। जो श्रीचैतन्य महाप्रभुका सर्वथा आचरित और प्रचारित विषय नहीं है, उसीको शत-प्रतिशत लोग श्रीचैतन्यदेवका धर्मोपदेश मानने लगे थे। आधुनिक अपसम्प्रदायोंने शास्त्र-विरुद्ध सिद्धान्तोंका प्रचुर प्रचारकर जनताके हृदयमें शुद्धभक्तिके प्रति अश्रद्धाका भाव उत्पन्न कर दिया था। इनमेंसे कुछ चरित्रहीन, अर्थ-लोलुप, सिद्धान्त-विरोधी आधुनिक सम्प्रदाय स्वयंको श्रीचैतन्य-सम्प्रदायका बतलाकर कहीं चैतन्यविरोधी मत और कहीं चैतन्यमतको विकृतकर उस विकृत मतका प्रचार कर रहे थे। इन तथाकथित विकृत-चैतन्य मतावलम्बी व्यक्तियोंका आचरण देखकर शिक्षित लोग वैष्णव सम्प्रदायसे घृणा करने लगे थे।

समाजमें वीर-पूजा, नायक-पूजा आदिकी प्रधानता हो गयी थी। अतिमानववाद, दरिद्र-नारायण, जनता-

भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी विचार–वैशिष्ट्य

श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज

जनार्दन आदि बहुमुखी मायावाद–रूपी नास्तिकता शिक्षित समाजकी बुद्धिको भी ग्रास कर रही थी। इसके अतिरिक्त राजनैतिक साम्यवादकी जो विश्वग्रासी अग्नि समग्र जगत्में प्रज्ज्वलित हुई, वह अवशिष्ट(बचे हुए) भारतीय–धर्मके कङ्कालको भी झुलसाने लगी। इससे एक श्रेणीके लोगोंने धर्मको मौखिक रूपमें स्वीकार किया और दूसरी श्रेणीके लोगोंने धर्मको सम्पूर्णरूपसे अनावश्यक समझकर उस मौखिकताका भी त्याग कर दिया। धर्मके ऐसे दुर्दिनोंमें भारतीय–धर्मके क्षितिजमें क्रमशः दो भगवत् विभूतियोंका आविर्भाव हुआ, जिनके दिव्य आलोकसे धर्मके अन्धकार युगकी परिसमाप्ति हुई। ये दिव्य विभूतियाँ हैं—भगवत् पार्षद श्रील भक्तिविनोद ठाकुर और गौरवाणीके मूर्तिमान विग्रह श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर। श्रील भक्तिविनोद ठाकुर आधुनिक जगत्में शुद्धभक्ति–प्रचारके बीज दाता हैं और श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती उसे पुष्पित और पल्लवित कर फलप्रद बनानेवाले हैं। श्रील भक्तिविनोद ठाकुरने शुद्धभक्ति–प्रचारकी परिकल्पना और योजना प्रस्तुत की और श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वतीने उन परिकल्पनाओं एवं योजनाओंको व्यावहारिक रूप देकर कार्यमें परिणत किया; श्रील भक्तिविनोद ठाकुरने उसका ढाँचा प्रस्तुत किया, श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वतीने उसमें प्राण डालकर, उसे सँवार–सजाकर समाजके सामने ऐसी आकर्षक और युगोचित शैलीमें प्रस्तुत किया कि लोगोंने उत्कण्ठित होकर उसे बड़ी श्रद्धासे अपनाया।

जन्म और माता–पिता

ॐ विष्णुपाद श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुरका आविर्भाव ६ फरवरी सन् १८७४ ई॰ शुक्रवारको माघी कृष्ण–पञ्चमी तिथिमें अपराह्न ३.३० बजे श्रीजगन्नाथपुरीमें हुआ था। इनके पिताका नाम श्रीभक्तिविनोद ठाकुर और माताका नाम श्रीमती भगवती देवी था। ये भक्तिविनोद ठाकुर ही आधुनिक युगमें शुद्धभक्ति–प्रचारके मूल पुरुष हैं। विशाल गौड़ीय–साहित्यका सृजनकर श्रीमन्महाप्रभुके द्वारा प्रचारित शुद्धभक्तिको पुनः प्रवाहित करनेके कारण श्रीभक्तिविनोद ठाकुर श्रीमाध्व–गौड़ीय–वैष्णव सम्प्रदायमें सप्तम गोस्वामीके नामसे विख्यात हैं। माता भगवती देवी नवजात शिशुके कन्धेपर स्वाभाविक यज्ञोपवीत और द्वादश अङ्गोंमें तिलक देखकर बड़ी

विस्मित हुई। उन्होंने तत्काल ही अपने पतिदेव और घरके दूसरे लोगोंको बुलाकर उस अलौकिक बालकको दिखाया। सबने उस शिशुके किसी महापुरुष होनेका अनुमान किया। श्रील भक्तिविनोद ठाकुरने श्रीजगन्नाथदेवकी पराशक्ति विमलादेवीके नामपर शिशुका नाम 'श्रीविमलाप्रसाद' रखा।

शैशव (शिशु-अवस्था)

विमलाप्रसाद एक प्रतिभा-सम्पन्न शिशु थे। उनके शैशवकालसे ही लोगोंको उनकी विलक्षण प्रतिभाका परिचय होने लगा था। एक समय श्रीजगन्नाथदेवकी रथायात्राका महोत्सव चल रहा था। विमलाप्रसाद उस समय केवल छह महीनेके शिशु थे। श्रीजगन्नाथदेवका रथ मूल मन्दिरसे गुण्डिचा-मन्दिर जानेके समय मार्गमें इनके घरके सामने राजमार्गपर खड़ा हो गया। बहुत प्रकारके प्रयत्न किये जानेपर भी रथ टस-से-मस नहीं हुआ, पूरे तीन दिनोंतक वहीं खड़ा रहा। ऐसी परिस्थितिमें श्रील भक्तिविनोद ठाकुरके घरके सामने ही तीन दिनोंतक निरन्तर हरि-सङ्कीर्तन होता रहा। तीसरे दिन श्रीमती भगवतीदेवीकी गोदमें शोभायमान छः मासके शिशुके श्रीजगन्नाथदेवके समीप उपस्थित होकर हाथ पसारकर श्रीजगन्नाथदेवके चरण-कमलोंका स्पर्श करनेपर भगवान् जगन्नाथदेवके गलेमेंसे शिशुको एक प्रसादी पुष्पमाला प्राप्त हुई। श्रील भक्तिविनोद ठाकुरने उसी समय बालकके मुखमें भगवान् [जगन्नाथ] का महाप्रसाद देकर अन्न-प्राशन भी कर दिया। इतना होना था कि एक बड़े शब्दके साथ भगवान् श्रीजगन्नाथदेवका रथ धीरे-धीरे आगेकी ओर बढ़ने लगा। उपस्थित समस्त भक्त-मण्डली एवं यात्री शिशुके प्रभावको देखकर दङ्ग रह गये।

विमलाप्रसादका सारा शैशवकाल हरि-सङ्कीर्तनमय वातावरणमें ही व्यतीत हुआ। इसका कारण यह था कि श्रील भक्तिविनोद ठाकुर जहाँ भी रहते, वह स्थान सर्वदा हरि-सङ्कीर्तनसे, भगवान् और भक्तोंकी वीर्यवती कथाओंसे मुखरित रहा करता। बालककी भगवद्-भक्तिके प्रति स्वाभाविक रुचि थी।

शिक्षा

कुछ समयके पश्चात् श्रील भक्तिविनोद ठाकुर उड़ीसासे पुनः बङ्गालमें चले आये। यहाँ वे रानाघाट और श्रीरामपुर आदि स्थानोंपर Deputy Magistrate के पदपर थे। बालक विमलाप्रसादको यहीं स्कूलमें भर्ती करा दिया गया। कुछ ही दिनोंमें बालकने अपनी अलौकिक प्रतिभा और सूक्ष्म बुद्धिसे तथा प्रगाढ़ अनुशीलन और विशुद्ध चरित्रसे सबको विस्मित कर दिया। जब वह सातवीं कक्षामें पढ़ते थे, तभी श्रील भक्तिविनोद ठाकुरने पुरीसे तुलसीकी माला मँगाकर इन्हें 'श्रीहरिनाम' महामन्त्र और 'श्रीनृसिंह' मन्त्रराज प्रदान किया। इसी समयसे वे स्वयं बालकको 'श्रीचैतन्यचरितामृत' ग्रन्थ भी नियमित रूपसे पढ़ाने लगे।

जिस समय विमलाप्रसाद नौ वर्षके थे, उस समय श्रील भक्तिविनोद ठाकुर कलकत्तामें रामबागान स्थित अपने पैतृक वासस्थानमें गृह-निर्माण करा रहे थे। उसमें खुदाईके समय श्रीकूर्मदेवकी अर्चामूर्ति प्रकाशित हुई। श्रील भक्तिविनोद ठाकुरने नौ वर्षीय विमलाप्रसादको पाञ्चरात्रिक विधिसे अर्चनकी शिक्षा देकर उन्हें श्रीकूर्मदेवके अर्चन-पूजनका दायित्व दे दिया।

श्रीविमलाप्रसादको उच्च-विद्यालय की शिक्षाके साथ-साथ संस्कृतकी भी शिक्षा दी जाने लगी। जब वे पाँचवीं कक्षामें थे, तभीसे तारकेश्वर लाईनके सियाखाना नामक ग्रामके प्रख्यात पण्डित महेशचन्द्र चूड़ामणिके पास वे गणित और ज्योतिषके ग्रन्थोंका अध्ययन करने लगे। थोड़े ही दिनोंमें उक्त विषयोंमें बालकने अपनी अभूतपूर्व प्रतिभा और पारदर्शिताका परिचय दिया। गणित और फलित ज्योतिषमें बालककी स्वाभाविक प्रतिभा देखकर शिक्षक और सम्पर्कमें आनेवाले लोग आश्चर्यचकित हो पड़ते थे। पन्द्रह वर्षकी छोटी अवस्थामें ही महाभागवत गुरुवर्गने बालककी विद्वतासे मुग्ध होकर उन्हें 'सिद्धान्त सरस्वती' की उपाधि प्रदान कर दी थी।

सन् १८८५ ई॰ में श्रील भक्तिविनोद ठाकुरने कलकत्तामें विश्व–वैष्णव राजसभाकी पुनः स्थापना की। उसके रविवारीय साप्ताहिक अधिवेशनमें देशके उच्च–शिक्षित और सम्भ्रान्त व्यक्ति सम्मिलित होते और धर्मके सम्बन्धमें चर्चा किया करते थे। विमलाप्रसाद (श्रीसिद्धान्त सरस्वती) प्रत्येक साप्ताहिक अधिवेशनमें श्रील भक्तिविनोद ठाकुरके साथ उनके 'भक्तिरसामृतसिन्धु' ग्रन्थको लेकर जाया करते और वहाँ ध्यानपूर्वक शास्त्रीय चर्चा श्रवण करते थे। श्रीसिद्धान्त सरस्वती केवल विद्यालयमें ही पाठ्य–पुस्तकोंका अध्ययन करते, घरपर इनका अधिक समय धर्मशास्त्रों तथा ज्योतिषके ग्रन्थोंके अध्ययनमें ही व्यतीत होता था।

सन् १८९२ ई॰ में श्रीसिद्धान्त सरस्वती संस्कृत महाविद्यालयमें भर्ती हुए। वहाँ इन्होंने पाठ्य–पुस्तकोंको पढ़नेके स्थानपर महाविद्यालयके पुस्तकालयमे उपलब्ध प्रधान–प्रधान समस्त ग्रन्थोंको पढ़ लिया। इसी समय इन्होंने वैदिक पण्डित पृथ्वीधर शर्माके निकट वेदोंका भी विधिवत् अध्ययन किया। पण्डित पृथ्वीधर शर्मासे वेदोंका अध्ययनकर श्रीसिद्धान्त सरस्वती सन् १८९८ ई॰ में पृथक् रूपमें 'सारस्वत–चतुष्पाठी' खोलकर विद्यार्थियोंको पढ़ाने लगे। प्रकाण्ड विद्वता और अध्यापन कुशलतासे थोड़े ही दिनोंमें इनका यश चारों ओर फैल गया। इन्होंने इसी चतुष्पाठीसे 'ज्योतिर्विद' और 'बृहस्पति' नामक ज्योतिषकी दो मासिक पत्रिकाएँ और ज्योतिषके कुछ ग्रन्थोंको भी प्रकाशित किया।

जड़ विद्यासे वैराग्य

सारस्वत चतुष्पाठीमें अध्यापन करते समय ही श्रीसिद्धान्त सरस्वतीको जड़–विद्या और संसारसे वैराग्य हुआ। ये अपनी आत्मकथामें लिखते हैं—"मैंने सोचा यदि मैं अधिक उच्च शिक्षा प्राप्त करूँगा, तो परिवारके सदस्य मुझे संसारमें प्रवेश करनेके लिये विवश करेंगे। मैं जड़–विद्याके अनुशीलन और अर्थोपार्जन द्वारा भवजालमें फँसकर अपना अमूल्य जीवन नष्ट नहीं करूँगा। मैं इस जीवनको सम्पूर्ण रूपसे हरि–सेवामें ही लगाऊँगा। ऐसा स्थिर करके मैंने संस्कृत महाविद्यालयमें अध्ययनका परित्याग कर दिया।"

तीर्थ–पर्यटन

सन् १८९५ ई॰ में स्वाधीन त्रिपुरा स्टेटके महाराजा वीरचन्द्रने श्रीसिद्धान्त सरस्वतीकी विद्वतासे मुग्ध होकर इन्हें अपने यहाँ बुला लिया। उस समय वहाँ 'राजरत्नाकर' नामक एक ग्रन्थके प्रकाशनका कार्य चल रहा था, जिसमें त्रिपुरा–राज्यके आदि नरेशसे लेकर तत्कालीन महाराजा वीरचन्द्र तकके समस्त राजाओंका जीवन–चरित्र लिखा जा रहा था। श्रीसिद्धान्त सरस्वती सहकारी सम्पादकके रूपमें 'राजरत्नाकर' का सम्पादन कार्य करने लगे। कुछ समयके पश्चात् इन्हें राजा बहादुर और राजकुमारको संस्कृत और बङ्गला पढ़ानेका दायित्व भी प्राप्त हुआ। इन कार्योंमें श्रीसिद्धान्त सरस्वतीका तनिक भी मन नहीं लगता था। परन्तु इनको यहाँपर परमार्थ–विषय अनुशीलनके लिये सब समय सुयोग रहता था, इसीलिए इन्होंने इस राजकार्यको छोड़ा नहीं। राजभवनमें एक बड़ा ग्रन्थागार था, जिसमें प्रायः समस्त प्राचीन और आधुनिक धर्मग्रन्थ थे। श्रीसिद्धान्त सरस्वतीने इन समस्त ग्रन्थोंको पढ़ डाला। इतना ही नहीं, यहींसे इन्होंने मथुरा, वृन्दावन, ब्रजके समस्त तीर्थ, द्वारका, जगन्नाथ पुरी, सिंहाचलम, राज महेन्द्री, मद्रास, तिरुपति, कुम्भकोणम, कांचीपुरम, श्रीरङ्गम, मदुरई, मुम्बई, कन्याकुमारी आदि भारतके उन समस्त प्रधान–प्रधान तीर्थोंमें भ्रमण किया, जहाँ–जहाँ कलियुगपावनावतारी श्रीचैतन्य महाप्रभु कृपापूर्वक पधारे थे तथा उन स्थानोंसे इन्होंने महत्वपूर्ण साम्प्रदायिक तथ्योंका संग्रह किया।

श्रीगुरुदेवसे मिलन और दीक्षा

इसी बीच श्रील भक्तिविनोद ठाकुरने सरकारी पदसे अवसर ग्रहणकर श्रीधाम नवद्वीपके गोद्रुमद्वीपमें सरस्वती और गङ्गाके सङ्गमके पास ही 'स्वानन्द–सुखद–

कुञ्ज' नामक एक भजनकुटीका निर्माण कराया। श्रीसिद्धान्त सरस्वती त्रिपुरासे अवकाश मिलते ही स्वानन्द-सुखद-कुञ्ज' में ठाकुर महाशयके दर्शनोंके लिये आया करते थे। उस समय गौड़मण्डल तथा व्रजमण्डलके प्रख्यात विरक्त महात्मा श्रीगौरकिशोरदास बाबाजी महाराज भी स्वानन्द-सुखद-कुञ्जमें उपस्थित होकर ठाकुर भक्तिविनोदसे श्रीमद्भागवत श्रवण करते थे। यहींपर श्रीसिद्धान्त सरस्वतीकी भेंट श्रीगौरकिशोर दास बाबाजी महाराजसे सर्वप्रथम सन् १८९८ ई॰ में हुई। श्रीगौरकिशोर दास बाबाजी महाराजके अतिमर्त्य चरित्र, आदर्श भक्तिमय जीवन और तीव्र वैराग्यको देखकर श्रीसिद्धान्त सरस्वती बड़े प्रभावित हुए। इन्होंने बाबाजीसे दीक्षा लेनेका विचार किया। परन्तु बाबाजीने दीनतापूर्वक कहा—"कहाँ आप सर्वशास्त्र पारङ्गत परमसन्त श्रीभक्तिविनोद ठाकुरके सुपुत्र हैं, स्वयं भी अगाध विद्वान हैं, बड़े घरमें जन्में हैं और कहाँ मैं मूर्ख व्यक्ति हूँ। मैं आपको कैसे दीक्षा दे सकता हूँ?" यह सुनकर श्रीसिद्धान्त सरस्वतीको बड़ी निराशा हुई। उन्होंने कठोर वैराग्यका अवलम्बन किया। दिन-रात २४ घण्टोंमें एक बार थोड़ा-सा भगवत् प्रसाद पाते, वह भी थाल या पत्तेमें नहीं, जमीनपर रखकर गोमुख द्वारा (बिना हाथका प्रयोग किये गायकी तरह केवल मुख लगाकर) ही प्रसाद सेवन करते। इनका कठोर वैराग्य और अपूर्व निष्ठा देखकर बाबाजी महाराजका हृदय द्रवित हुआ। उन्होंने श्रील भक्तिविनोद ठाकुरकी इच्छानुसार सिद्धान्त सरस्वतीको भागवती दीक्षा प्रदान की। यह दीक्षा सन् १९०० ई॰ में सम्पन्न हुई थी।

दीक्षाके पश्चात् श्रीसिद्धान्त सरस्वतीने अपना जीवन सम्पूर्ण रूपसे हरि-सेवामय बनानेका सङ्कल्प कर लिया। सन् १९०५ ई॰ में इनकी इच्छानुसार त्रिपुराधीशने इनको राजकार्यसे मुक्त कर दिया। महाराजने अवसर-प्रदानके समय इन्हें अवशिष्ट जीवनभर तक पूरा वेतन पेंशनके रूपमें देनेकी अभिलाषा व्यक्त की। श्रीसिद्धान्त सरस्वतीने उस समय तो महाराजका अनुरोध मान लिया; परन्तु कुछ समयके बाद पेंशनको अस्वीकार कर दिया।

अब श्रीसिद्धान्त सरस्वतीने श्रीलभक्तिविनोद ठाकुरके निर्देशानुसार श्रीगौर-आविर्भाव स्थली श्रीधाम मायापुरमें रहकर भारत और भारतके बाहर श्रीचैतन्य महाप्रभुकी वाणीके प्रचारका सेवा-कार्य आरम्भ किया।

शुद्ध-भक्तिका प्रचार

श्रीसिद्धान्त सरस्वतीके जीवनका प्रधान लक्ष्य शुद्धभक्तिकी पुनः प्रतिष्ठाकर श्रीचैतन्य महाप्रभुके मनोऽभीष्टको पूर्ण करना था। इन्होंने अपनी अलौकिक विद्वता, अकाट्य शास्त्र-युक्ति, प्रखर प्रतिभा एवं शास्त्र-प्रमाणोंके बलपर भक्ति-विरुद्ध कर्मी, ज्ञानी, मायावादी और अन्यान्य अपसम्प्रदायोंके कुसिद्धान्तोंका खण्डनकर उनकी निस्सारता प्रमाणित कर दी तथा श्रीचैतन्य महाप्रभुके प्रेम-धर्मका अत्यन्त अल्पकालमें सर्वत्र प्रचार कर दिया। जड़वादसे परिपूर्ण विनाशकारी युगमें इनका यह जगत्-कल्याणकारी कार्य अति महत्त्वका है। इस महत्त्वपूर्ण कार्यके लिये इन्होंने अनेक-अनेक मौलिक, व्यापक और अत्यन्त उपादेय साधनोंका अवलम्बन किया।

सन् १९०९ ई॰ में श्रीसिद्धान्त सरस्वतीने श्रीधाम मायापुरमें चन्द्रशेखर भवनके अन्तर्गत 'भक्तिविजय-भवन' का निर्माणकर प्रचारकार्य आरम्भ किया। वहाँसे ये गाँव-गाँव और नगर-नगरमें भ्रमणकर शुद्धभक्ति धर्मका प्रचार करने लगे। शास्त्रीय-युक्ति और प्रमाणोंके बलपर इन्होंने अपसम्प्रदायोंके भक्ति-विरुद्ध अपसिद्धान्तोंका निर्भयतापूर्वक खण्डनकर निरपेक्ष सत्यके प्रतिपादनमें अपना मन-प्राण सर्वस्व लगा दिया। सखी-भेकी, गौरनागरी, सहजिया, स्मार्त, जाति गोसाईं तथा बहुमुखी मायावाद आदि असत्-सम्प्रदायोंके विचारोंको शास्त्र-विरुद्ध प्रमाणितकर उन्हें चूर्ण-विचूर्णकर दिया। इनमेंसे कुछ ध्वंस हो गये, कुछने आत्म-समर्पण कर दिया और कुछ मलिन हृदयरूपी घोर अन्धकार पूर्ण गिरि-कन्दराओंमें जा छिपे।

सन् १९११ ई॰ में मेदिनीपुरमें 'बालिघाई' नामक स्थानपर जाति–गोस्वामी और स्मार्त ब्राह्मणोंने मिलकर वैष्णवोंको शास्त्रार्थके लिये ललकारा। अशेष शास्त्रदर्शी विश्वम्भरानन्द देव गोस्वामीके सभापतित्वमें विराट सभा हुई। वृन्दावनके प्रसिद्ध निरपेक्ष पण्डित श्रीमधुसूदन गोस्वामी भी उक्त सभामें उपस्थित थे। श्रीलभक्तिविनोद ठाकुरकी आज्ञा लेकर श्रीसिद्धान्त सरस्वतीने उक्त शास्त्रार्थमें वैष्णव–धर्मका प्रतिनिधित्व किया। असंख्य श्रौताओं और विराट पण्डित मण्डलीकी उपस्थितिमें इन्होंने विरोधियोंके विचारोंको खण्ड–खण्डकर वैष्णव–धर्मकी श्रेष्ठताका स्थापन कर दिया। 'वैष्णव धर्मकी जय'के नारोंसे आकाश–गूँज उठा। विरोधीगण मुख छिपाकर भाग गये। श्रीसिद्धान्त सरस्वतीकी उन शास्त्र–युक्तियोंका संग्रह 'ब्राह्मण और वैष्णव' नामक ग्रन्थके रूपमें प्रकाशित हुआ। इस विजयसे बङ्गालमें लुप्त–प्रायः विशुद्ध वैष्णवधर्म पुनः प्रबल रूपसे सञ्जीवित हो उठा।

श्रीसिद्धान्त सरस्वती निरपेक्ष–सत्यके परम निर्भीक प्रचारक थे। कासिम बाजारके सम्मेलनमें और अपने गुरुदेव नित्यलीला प्रविष्ट श्रीगौरकिशोरदास बाबाजी महाराजकी समाधिके अवसरपर इन आचार्य केशरीकी निरपेक्षता, निर्भीकता एवं अपूर्व वैष्णव–तेजका जो परिचय पाया जाता है, वह वैष्णव–जगत्के इतिहासमें अतुलनीय है। विरोधियोंने इनको प्राणोंसे मार डालनेके लिये कई षड़यन्त्र रचे, जिससे शुद्ध–वैष्णवधर्मकी प्रगति (प्रचार–प्रसार) रुक जाय, परन्तु भगवान्की इच्छासे उनके सारे षड़यन्त्र विफल हो गये। श्रीधाम नवद्वीप–परिक्रमाके समय वर्तमान नवद्वीप शहरमें वहाँके गोस्वामियों तथा स्मार्त आदि विरोधी–सम्प्रदायोंने इनको मार डालनेके लिये आक्रमण किया; परन्तु भगवान् जिसकी रक्षा करते हैं, सारा संसार मिलकर भी उसका बाल भी बाँका नहीं कर सकता; अस्तु उनका षड़यन्त्र विफल रहा।

धर्म–स्थापन और प्रचार–कार्यको स्थायी बनानेके लिये एवं विश्वमें तीव्र गतिसे शुद्धभक्तिके प्रचारके लिये इन्होंने सन् १९१८ ई॰ में श्रीगौर–जन्मोत्सवके पवित्र अवसरपर त्रिदण्ड–संन्यास ग्रहण किया। उसी समय उन्होंने मायापुरमें चन्द्रशेखर भवनमें श्रीगुरु–गौराङ्ग और श्रीराधाविनोदप्राण विग्रहको प्रकाशकर विश्व–विश्रुत श्रीचैतन्यमठ और कलकत्तामें श्रीगौड़ीय मठकी स्थापना की। इन स्थानोंसे ब्रह्मचारियों, वानप्रस्थियों और संन्यासियोंको संघबद्धकर देश–विदेशमें प्रेरित किया। इन विद्वान और योग्य दलोंने देशके कोने–कोने तथा इंग्लैंड,

जर्मनी, फ्रान्स, इटली आदि देशोंमें श्रीमन्महाप्रभुकी वाणीका प्रचार किया।

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुरने श्रीधाम मायापुरमें आकर (मूल) मठ श्रीचैतन्य मठ तथा कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, दिल्ली, मथुरा–वृन्दावन, प्रयाग, हरिद्वार, पुरी, वाराणसी, लखनऊ, ढाका, मैमनसिंह, रङ्गून और लन्दन आदि अनेक स्थानोंपर श्रीगौड़ीय मठ; कन्याकुमारी, पुरी, सोरों आदि अगणित स्थानोंमें श्रीचैतन्यपादपीठ और विभिन्न स्थानोंमें भक्तिविनोद–आसन, गौड़ीय आश्रम आदिकी स्थापना की। वहाँ योग्य–योग्य ब्रह्मचारी और संन्यासियोंको रखकर शुद्धभक्तिकी कथाका प्रचार किया।

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुरने संसारकी प्रत्येक वस्तुको हरिसेवामें नियुक्त करनेका महान क्रान्तिकारी आदर्श स्थापित किया है। आधुनिक विज्ञानको भी इन्होंने अछूता नहीं रखा। कलकत्तामें 'गौड़ीय प्रिंटिङ्ग प्रेस' कृष्ण–नगरमें 'भागवत प्रेस', कटकमें 'परमार्थी प्रिंटिङ्ग वर्क्स' तथा श्रीधाम मायापुरमें 'नदिया प्रकाश यन्त्रालय' रूप बृहद मृदङ्ग—मुद्रण यन्त्रकी स्थापना की। इन मुद्रण यन्त्रों—बृहद मृदङ्गोंके द्वारा बङ्गला भाषामें 'गौड़ीय', 'नदिया प्रकाश', हिन्दीमें 'भागवत', उड़ियामें 'परमार्थी', आसामी भाषामें 'कीर्त्तन', तथा अंग्रेजीमें हारमोनिस्ट (Harmonist) या सज्जन तोषणी—सात विभिन्न भाषाओंमें पारमार्थिक दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक और मासिक पत्रिकाओंको प्रकाशित किया। इन पत्रिकाओं और शुद्ध भक्ति–प्रचार केन्द्रोंने देश–विदेशके कोने–कोनेमें विशुद्धभक्तिकी कथाका थोड़े ही समयमें प्रचार करनेमें अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

इतना ही नहीं, श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुरने प्राचीन ग्रन्थों तथा गोस्वामी–ग्रन्थोंका अनुवाद किया तथा उनपर सुबोध, सुखद और गम्भीर भाष्य लिखे तथा स्वयं अनेक मौलिक ग्रन्थ लिखे और योग्य शिष्योंको प्रेरणा प्रदानकर उनसे भी लिखवाये। श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुरके कठोर परिश्रमके फलस्वरूप ही आज गौड़ीय–साहित्यका भण्डार इतना समृद्ध है।

बाल्यकालसे ही लोगोंकी रुचि धर्म–पथमें रहे, इसके लिये श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुरने अनेक विद्यालय, संस्कृत पाठशालाएँ, ग्रन्थागार तथा रिसर्च इन्स्टीट्यूटकी स्थापना की। विद्यालयोंमें धर्म-शिक्षाका प्रवर्तन अनिवार्य किया। विद्वानोंको भक्ति–प्रचारमें उत्साहित करनेके लिये इन्होंने 'भक्तिशास्त्री', 'सम्प्रदाय–वैभवाचार्य' और 'सार्वभौम' आदिकी परीक्षाओं और उपाधियोंका प्रवर्तन किया। सामूहिक रूपसे प्रचारके लिये इन्होंने धाम–प्रचारिणी–सभा तथा विश्व–वैष्णव राजसभाको पुनः प्रकाशित किया तथा वे स्वयं विश्व–वैष्णव राजसभाके अध्यक्ष निर्वाचित हुए। इन सभाओंके द्वारा जगत्का बड़ा उपकार साधित हुआ है। श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुरने अल्प शिक्षितों, बच्चों और ग्रामीण स्त्री–पुरुषोंमें शुद्ध–भक्तिके प्रचारके लिये छायाचित्र (Magic lantern) के माध्यमसे अपनी अत्यन्त गम्भीर और युगोपयोगी सूझबूझका परिचय दिया है। अल्प–शिक्षित अथवा अशिक्षित समाजमें इन Magic lantern (छायाचित्र) द्वारा प्रदर्शित सत्–शिक्षाओंका बड़ा प्रभाव हुआ है। इसलिए इनके द्वारा प्रवर्तित सत्–शिक्षा प्रदर्शनियों तथा पारमार्थिक सम्मेलनोंका महत्व भी कम नहीं है।

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुरने नवधा भक्ति–स्वरूप नवद्वीप धामके नौ द्वीपोंमें नवधा भक्तिके उपास्य–तत्त्वकी अर्चा–मूर्तियोंको प्रकाशकर, धाम–परिक्रमाका प्रवर्तनकर, लुप्ततीर्थोंका पुनरुद्धारकर, प्राचीन दुर्लभ ग्रन्थों और पारमार्थिक पत्रिकाओंका प्रकाशनकर, संन्यासी–ब्रह्मचारियोंको संघबद्धकर, चातुर्मास्य और कार्तिकव्रतोंका स्वयं आचरणकर तथा अन्यों द्वारा कराकर, श्रीव्यास–पूजा अथवा श्रीगुरुपूजाका पुनः प्रचलनकर, यन्त्रयुगमें [सात्वत–] तन्त्रयुगका आविर्भाव कराकर, हरिनाम–श्रवण–कीर्त्तनकी सर्वश्रेष्ठता प्रमाणितकर, श्रीमन्महाप्रभुके प्रेम–धर्मका विश्वव्यापी प्रचारकर—'पृथ्वीते यत आछे नगरादि ग्राम सर्वत्र प्रचार हइबे मोर नाम'—श्रीमन्महाप्रभुकी इस मनोभिलाषाको पूर्ण कर दिया।

नित्यलीलामें प्रवेश (अप्रकट)

इस प्रकार गौर–मनोऽभीष्ट पूर्णकर ०१ जनवरी १९३७ ई॰ शुक्रवारके दिन अपने प्रियजनोंको विरह–सागरमें निमज्जितकर कलकत्ता स्थित गौड़ीय मठमें ब्रह्म–माध्व–गौड़ीय सम्प्रदायके संरक्षक, श्रीकृष्णचैतन्य–आम्नायके नवमाधस्तन ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री श्रीमद्भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी 'प्रभुपाद' स्वेच्छापूर्वक अपने नित्यधाम श्रीगोलोक वृन्दावनमें श्रीराधाकृष्णकी निशान्तलीलामें प्रवेश कर गये।

विचार–वैशिष्ट्य

जगत्–कल्याणके लिये युग–युगमें जो भगवत्पार्षदगण भगवान्की इच्छासे जगत्में आचार्यके रूपमें अवतीर्ण होते हैं, उनका अपना–अपना एक–एक मौलिकत्व [आधारभूत गुण] और वैशिष्ट्य होता है। भगवान्के निजजन ॐ विष्णुपाद श्रीलभक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामीका अपना एक मौलिकत्व और वैशिष्ट्य विद्यमान रहनेपर भी उनमें सभी पूर्वाचार्योंके समस्त मौलिकत्वों और वैशिष्ट्योंका अपूर्व समावेश लक्ष्य किया जाता है। इनके जीवन–चरित, ग्रन्थों और विचारोंकी सामूहिक रूपमें चर्चा और अनुशीलन करनेपर इनके महान व्यक्तित्व, अलौकिक पाण्डित्य, परम उदार चरित्र, चतुर्मुखी प्रतिभा और अप्राकृत कृष्ण–प्रेमकी झलक हमारे नेत्रोंके सामने चमकने लगती है।

आचार्यशङ्करका प्रचार–वैशिष्ट्य, श्रीरामानुजाचार्यकी सूक्ष्मातिसूक्ष्म और प्रबल शास्त्रयुक्ति द्वारा मायावाद खण्डनका वैशिष्ट्य, श्रीमध्वाचार्यके सर्वशास्त्र–प्रमाण–

संग्रह द्वारा मायावाद खण्डन और स्वमत स्थापनका वैशिष्ट्य, श्रीमाध्व-सम्प्रदायके प्रधान नैयायिक पण्डित आचार्यवर श्रीव्यासतीर्थकी खण्डन-मण्डनकी निपुणताका वैशिष्ट्य, श्रीस्वरूप-रूपके प्रेम-भक्ति-प्रकाशका वैशिष्ट्य, श्रील सनातन गोस्वामीके वैधीभक्ति स्थापनका वैशिष्ट्य, श्रील हरिदास ठाकुरकी हरिनाम-निष्ठाका वैशिष्ट्य, श्रीरूपानुग श्रील रघुनाथ दास गोस्वामी और श्रीगौरकिशोरदासके अप्राकृत कठोर वैराग्यका वैशिष्ट्य, ठाकुर श्रील नरोत्तमका दैव-वर्णाश्रम स्थापना एवं कीर्तनाख्या भक्तिके प्रचारका वैशिष्ट्य, श्रील जीव गोस्वामीकी सर्वशास्त्र पारदर्शिता, अतुलनीय पाण्डित्य तथा विरोधी मतवादोंका खण्डनकर श्रीचैतन्य प्रदर्शित शुद्ध-भक्तिधाराके संरक्षणका वैशिष्ट्य, श्रील विश्वनाथ चक्रवर्तीके सरस पाण्डित्यका वैशिष्ट्य एवं श्रील बलदेव विद्याभूषणकी अखिल वेदान्त-पारदर्शिताका वैशिष्ट्य—इन सबका अपूर्व समावेश आचार्य केशरी श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुर प्रभुपादमें देखा जाता है।

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुरने वेद-विद्वेषी नास्तिक चार्वाक, जैन और बौद्ध मतोंका; सांख्य, योग, न्याय और वैशेषिक आदि अर्द्ध-नास्तिक मतोंका एवं प्रच्छन्न-बौद्ध शङ्करके मायावादका खण्डनकर वेदके एक देशीय विशिष्टाद्वैतवाद, द्वैतवाद, शुद्धाद्वैतवाद एवं द्वैताद्वैतवाद—इन मतोंके अपूर्व समन्वय-स्वरूप स्वयं भगवान् श्रीचैतन्य महाप्रभु द्वारा प्रदर्शित वेदके सर्वदेशीय विचार—'अचिन्त्यभेदाभेद' का संसारमें प्रचार और स्थापनकर सार्वभौम आचार्यत्वका परिचय दिया है।

गौतम बुद्ध, आचार्यशङ्कर और श्रीरामानुजाचार्य आदि प्रमुख आचार्योंने बड़े-बड़े राजाओंकी सहायतासे, दिग्विजयी पण्डित शिष्योंकी सहायतासे जो प्रचार कार्य किये हैं, आचार्य श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुरने उनसे भी अधिक प्रचार-कार्य बिना किसी राजा आदिकी सहायतासे ही कर दिखाये हैं। उक्त आचार्योंके प्रचार-कार्यके लिये तात्कालीन राजाओंका सम्पूर्ण राजकोष प्रस्तुत रहता था। परन्तु श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुरने इतना

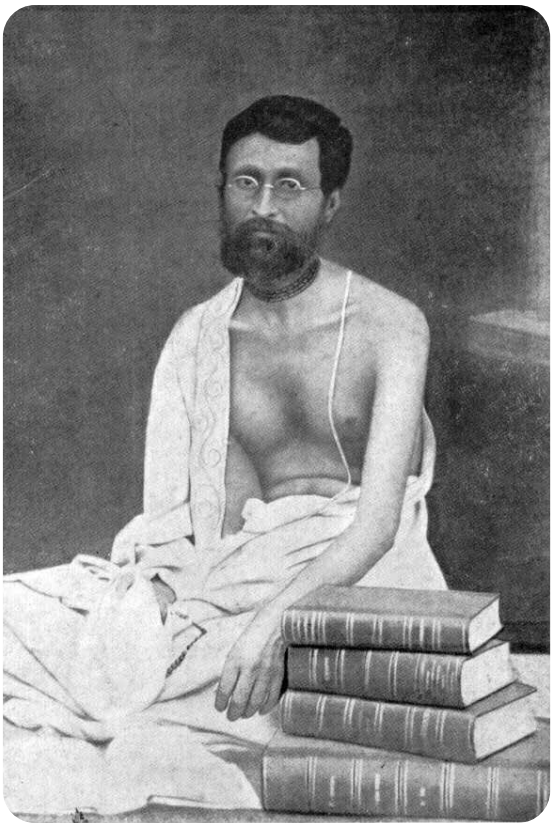

बड़ा विश्वव्यापी प्रचार केवल अपने ब्रह्मचारियों और संन्यासियोंके द्वारा अल्प मात्रामें संग्रहीत मुट्ठी-भिक्षा द्वारा ही सम्पादन किया है। यह श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुरके आचार्यत्वका एक प्रधान वैशिष्ट्य है। उनका कहना था कि सांसारिक अर्थ होनेसे ही भगवत्-सेवा और प्रचारका कार्य नहीं होता, उसके लिये स्थिरमति और निष्कपट सेवामय प्राणकी आवश्यकता होती है।

श्रीलभक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुरके जीवनका प्रधान लक्ष्य था—बहुरूपी मायावादके कुसिद्धान्तरूप जङ्गलको परिष्कारकर वहाँ शुद्धभक्तिका मन्दिर स्थापन करना। निरपेक्ष सत्यकथाके प्रचारमें श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुरकी असामान्य निर्भीकता, अतुलनीय ऐकान्तिकता, अदम्य उत्साह एवं नैरन्तर्यमयी चेष्टा देखी जाती थी। उनके

"निरपेक्ष सत्यकथाके प्रचारमें श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुरकी असामान्य निर्भीकता, अतुलनीय ऐकान्तिकता, अदम्य उत्साह एवं नैरन्तर्यमयी चेष्टा देखी जाती थी। ....जागतिक दृष्टिसे विराट धनी और जड़ प्रतिष्ठाके उच्च शिखरपर अवस्थित व्यक्तियोंकी मनकी सन्तुष्टिके लिये उन्होंने कभी भी सत्यका गला नहीं घोटा। निरपेक्ष सत्यका निर्भीक प्रचार उनके चरित्र–वैशिष्ट्यका मेरुदण्ड रहा।"

जीवनमें सैकड़ों बार ऐसा देखा गया है कि जागतिक दृष्टिसे विराट धनी और जड़ प्रतिष्ठाके उच्च शिखरपर अवस्थित व्यक्तियोंकी मनकी सन्तुष्टिके लिये उन्होंने कभी भी सत्यका गला नहीं घोटा। निरपेक्ष सत्यका निर्भीक प्रचार उनके चरित्र–वैशिष्ट्यका मेरुदण्ड रहा।

अक्लान्त भावसे [बिना किसी थकावटके] निरन्तर हरिकथाका कीर्त्तन करना श्रीलभक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुरके जीवनका एक अन्य वैशिष्ट्य था। कभी–कभी भोजन, शयन, विश्राम—सब कुछ भूलकर आठ–आठ, दस–दस घण्टे लगातार हरिकथाका कीर्त्तन करते इन्हें देखा गया है। हरिकथा कीर्त्तनमें तनिक भी बाधा देनेपर वे अत्यन्त असन्तुष्ट हो जाते थे।

Ontology and morphology (काया और छाया) का विचार; प्रत्यक्ष, परोक्ष, अपरोक्ष, अधोक्षज और अप्राकृत साध्य–साधनका तारतम्य विचार; फल्गु और युक्त वैराग्यका विचार—भारतीय धर्म–जगत्में इन महापुरुष—श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुरके मौलिक दान हैं।

इनका यह भी एक अन्य वैशिष्ट्य था कि अपने अनुगतजनोंमें जब भी कोई भक्ति–विरुद्ध थोड़ा–सा दोष देखते थे, चाहे वह अपना कितना भी प्रिय क्यों न हो उसी समय वे उसका कठोर प्रतिवाद करते थे और उसका संशोधन करवानेका प्रयत्न करते थे। उनके कठोर शासनसे कोई असन्तुष्ट होगा अथवा दुःखित होगा—ऐसा सोचकर वे अपने मङ्गलमय कठोर शासनसे कभी किसीको वञ्चित नहीं करते थे।

श्रीचैतन्यमहाप्रभुका प्रचारित मत ही श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुर का मत है, जो संक्षेपमें इस प्रकार है—

(१) आम्नाय वाक्य अर्थात् गुरु–परम्परासे चलते आ रहे वेद और उनके अनुगत श्रीमद्भागवत और गीता आदि ही मुख्य प्रमाण हैं।

(२) श्रीकृष्ण–स्वरूप श्रीहरि ही परमतत्त्व हैं।

(३) श्रीकृष्ण सर्वशक्तिमान हैं। उनकी पराशक्ति एक होनेपर भी उसके त्रिविध प्रकाश हैं—चित् शक्ति, जीव (तटस्थ) शक्ति और अचित् (जड़) शक्ति; पराशक्तिके और भी तीन प्रकारके प्रकाश हैं—सम्वित् शक्ति, सन्धिनी शक्ति तथा ह्लादिनी शक्ति। चित्–अचित् सभी कुछ शक्तिका ही परिणाम है।

(४) श्रीकृष्ण अखिल–रसामृत–सिन्धु हैं।

(५) बद्ध और मुक्त—दोनों प्रकारके जीव श्रीकृष्णकी जीवशक्ति द्वारा प्रकाशित भगवान्के विभिन्नांश तत्त्व हैं, संख्यामें अनन्त और अणु–चैतन्य हैं।

(६) तटस्थ धर्मवशतः बद्धजीव मायाके बन्धनमें हैं।

(७) मुक्त जीव मायासे मुक्त हैं।

(८) चित् और अचित् समस्त विश्वका श्रीहरिसे युगपत् भेद और अभेद है। अर्थात् चित्–अचित् समस्त विश्व भगवान्का अचिन्त्यभेदाभेद प्रकाश है।

(९) भक्ति ही जीवका साधन है। नाम–सङ्कीर्तन ही सर्वश्रेष्ठ भक्ति है।

(१०) शुद्ध कृष्णप्रेम ही जीवका एकमात्र प्रयोजन है।

ये सिद्धान्त ही निखिल वेद–वेदान्त, उपनिषद् और सात्वत् पुराणोंके द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त हैं।

जिस अनर्पितचरीं कृष्ण–प्रेमका दानकर और कृष्णनाम–सङ्कीर्तनका प्रचारकर स्वयं भगवान् श्रीचैतन्यदेव 'महावदान्य अवतार' कहलाते हैं, श्रीचैतन्य महाप्रभु द्वारा प्रकटित उसी कृष्ण–प्रेमका दानकर तथा कृष्णनाम–सङ्कीर्तनका प्रचारकर श्रीगौरहरिके निजजन श्रील रूप गोस्वामीने उपदेशामृतमें, श्रील रघुनाथदास गोस्वामीने स्तवावलीमें, श्रील नरोत्तम दास ठाकुरने 'प्रार्थना' और प्रेम–भक्तिचन्द्रिकामें तथा श्रील भक्तिविनोद ठाकुरने गीतावली और गीतमालामें श्रीमन्महाप्रभुके जिस अनर्पितचरीं अप्राकृत दानका कीर्त्तन किया है, उसे श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वतीने सुदृढ़ वैज्ञानिक विश्लेषण प्रदर्शनकर कीर्त्तन द्वारा संसारमें वितरणकर, पूर्वाचार्योंके विचारोंको ही परिस्फुट किया है। अतः ये श्रीरूपानुगवर श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुर आचार्यकुल–तिलक और महावदान्य–आचार्य हैं—इसमें सन्देह ही क्या है?

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुरने कर्मकाण्ड द्वारा मिलनेवाली भुक्ति, निर्विशेषज्ञान द्वारा प्राप्त होनेवाली मुक्ति तथा अष्टाङ्गयोग द्वारा पायी जानेवाली सिद्धिकी अभिलाषाओंको शास्त्र–युक्ति और प्रमाणके बलपर निःसार प्रमाणित कर दिया है। इनके प्रत्येक गद्य और प्रत्येक गद्यकी प्रत्येक पंक्तिमें मायावादका खण्डन देखकर कोई भी आलोचक बिना मुग्ध हुए नहीं रह सकता है। इतना ही नहीं भक्ति–साधकोंको सावधान करनेके लिये इन्होंने सूक्ष्मातिसूक्ष्म विचारोंके द्वारा विश्लेषणकर यह दिखलाया है कि केवल कर्म–ज्ञान–योगके अनुष्ठानोंमें ही नहीं, अपितु श्रवण, कीर्त्तन और अर्चन आदि भक्ति–अनुष्ठानोंकी आड़में भी भोग, मोक्ष और सिद्धिकी कामना किस प्रकारसे प्रवेश कर जाती है और साधकको अधःपतित कर देती है। भक्तिका ऐसा शुद्ध और सूक्ष्म विचार अन्यत्र दुर्लभ है।

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुरने पाञ्चरात्र–विधिसे मठ–मन्दिर और भगवान्‌की अर्चा–मूर्तियोंकी प्रतिष्ठाकर वहाँ भागवत विधिके अनुसार व्यवधान–रहित भगवन् नाम–रूप–गुण–परिकर–लीलाके श्रवण और कीर्त्तनरूप कीर्तनाख्या भक्तिकी व्यवस्थाकर पाञ्चरात्र और भागवत—इन दोनों पथोंका अपूर्व समन्वयकर श्रीमन्महाप्रभु द्वारा श्रील रूप गोस्वामीको प्रदान की गयी शिक्षाका ज्वलन्त आदर्श स्थापित किया है—यह भी इनके चरित्रका प्रधान वैशिष्ट्य है।

आचार्यकुल शिरोमणि श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुरने जगत्–कल्याणके लिये जो कार्य किये हैं, उसके लिये संसार इनका चिर ऋणी है और रहेगा। वे श्रीगौरवाणीके साक्षात् मूर्तिमान–विग्रह–स्वरूप हैं, [अर्थात् निरन्तर विशुद्धा–गौरवाणीके कीर्तनके अतिरिक्त उन्होंने अन्य किसी भी कथाका कीर्तन नहीं किया] अन्यथा इतने दीर्घकाल–साध्य कार्योंका सम्पादन इतने अल्पकालमें करना सर्वथा असम्भव होता। हम उनकी अप्राकृत वाणीका अनुशीलन करें, उनकी वाणीके माध्यमसे परतत्त्व वस्तुका साक्षात्कार करें, उनकी वाणीका अनुशीलनकर अपना जीवन सार्थक करें, उनकी वाणीका विश्वमें सर्वत्र प्रचार करें—श्रीगौरवाणीके मूर्तिमान विग्रह, अप्राकृत सरस्वती ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री श्रीमद्भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुर प्रभुपादके श्रीचरणकमलोंमें हमारी यही यथार्थ पुष्पाञ्जलि होगी।

नमस्ते गौरवाणी श्रीमूर्त्तये दीनतारिणे।
श्रीरूपानुगविरुद्धाऽपसिद्धान्तध्वान्तहारिणे॥

[जो गौर–वाणीके श्रीमूर्ति–स्वरूप, दीनजनोंके त्राण–कर्त्ता और श्रीरूपानुग विचारके विरुद्ध कुसिद्धान्त–रूप अन्धकारका विनाश करनेवाले हैं, उन श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुरको मैं नमस्कार करता हूँ।]

[श्रीभागवत–पत्रिका, वर्ष ५ (१९५९–६०), संख्या ९ से संग्रहीत अंश]

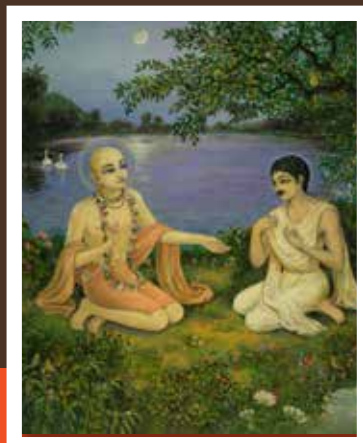

धारावाहिक

श्रीगौराङ्ग-सुधा

—श्रीपरमेश्वरी दास ब्रह्मचारी

(वर्ष-१६, संख्या—११-१२से आगे)

श्रील रामानन्दरायकी महिमाका वर्णन

एकदिन प्रद्युम्नमिश्र श्रीमन्महाप्रभुके पास आये तथा उनके श्रीचरणकमलोंमें साष्टाङ्ग दण्डवत् प्रणामकर निवेदन करने लगे—"हे प्रभो! मैं अधम तथा दीन-हीन गृहस्थ हूँ। मैंने न जाने ऐसा कौन-सा पुण्य कर्म किया है जिसके प्रभावसे मुझे आपके अति दुर्लभ चरणकमलोंके दर्शनका सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मेरी कृष्णकथा सुननेकी प्रबल इच्छा हो रही है, अतः आप कृपाकर मुझे कुछ कृष्णकी कथा सुनाइये।" यह सुनकर श्रीमन्महाप्रभु कहने लगे—"मैं कृष्णकथा नहीं जानता। कृष्णकथा तो रामानन्द जानते हैं। मैं स्वयं भी उनसे ही कृष्णकथा सुनता हूँ। अतः तुम रामानन्दजीके पास जाओ तथा उनसे निवेदन करो, वे तुम्हें अवश्य ही कृष्णकथा सुनायेंगे। तुम्हारा परम सौभाग्य है कि तुम्हारी कृष्णकथामें रुचि उदित हुई है, क्योंकि शास्त्रोंमें कहा गया है—

धर्मः स्वनुष्ठितः पुंसां विष्वक्सेनकथासु यः।
नोत्पादयेद् यदि रतिं श्रम एव हि केवलम्॥

(श्रीमद्भागवत—१/२/८)

अर्थात् यदि अपने वर्णाश्रमधर्मका अच्छी प्रकारसे पालन करनेपर भी किसी व्यक्तिकी भगवान्‌की कथाओंमें रुचि उत्पन्न नहीं होती है, तो वर्णाश्रमधर्मका पालन करनेमें किया गया सारा परिश्रम व्यर्थ ही है।"

श्रीमन्महाप्रभुका आदेश पाकर प्रद्युम्नमिश्र रामानन्दजीके पास गये। श्रीरामानन्दरायके सेवकने उन्हें आदरपूर्वक आसनपर बैठाया। बहुत देर तक रामानन्दजीका दर्शन न पाकर प्रद्युम्नमिश्रने सेवकसे उनके विषयमें पूछा। सेवकने उन्हें बताया—"श्रीरामानन्दजी दो परम सुन्दरी किशोरी देव-दासियोंको जो कि नृत्य-गीत आदिमें निपुणा हैं, उद्यानमें एकान्तमें ले जाकर अपने द्वारा रचित नाटकके अनुसार नृत्य-गीत आदि सिखा रहे हैं। आप थोड़ी प्रतीक्षा कीजिए, वे अभी आ ही रहे होंगे। फिर आपको उनसे जो भी कार्य हो, उन्हें कह देना, वे अवश्य ही उसे पूरा करेंगे।"

यह सुनकर प्रद्युम्नमिश्र वहींपर बैठकर रामानन्दजीकी प्रतीक्षा करने लगे। रामानन्दजी नित्यप्रति उन दोनों किशोरी देव-दासियोंको निर्जनमें ले जाकर अपने हाथोंसे

उनके अङ्गोंकी मालिश करते, अपने हाथोंसे उन्हें स्नान कराते तथा अपने हाथोंसे ही उनके समस्त अङ्गोंको पोंछते थे। फिर स्वयं ही उन्हें वस्त्र पहनाते तथा उनके सारे शरीरपर चन्दन, कस्तुरी, कपूर आदिसे बने हुए लेपसे चित्रकारी करते थे। परन्तु इतना कुछ करनेपर भी उनके मनमें लेशमात्र भी काम-विकार नहीं आता था। जिस प्रकार लकड़ी-पत्थरको स्पर्श करनेसे मनमें किसी प्रकारका कोई विकार उत्पन्न नहीं होता, उसी प्रकार उन किशोरियोंका दर्शन तथा स्पर्श करके भी रामानन्दजीके मनमें किसी प्रकारका विकार नहीं आता था। रामानन्दजीने 'श्रीजगन्नाथवल्लभ' नामक एक नाटककी रचना की थी। उस नाटकके अनुसार श्रीजगन्नाथजीके समक्ष गोपीभावसे अभिनय करनेके लिए वे दो किशोरियोंको एकान्तमें गोपीभावकी शिक्षा प्रदान कर रहे थे। वे दोनों कन्याएँ नाटकमें प्रधाना गोपियोंकी लीलाका अभिनय करनेवाली थीं। श्रीरामानन्दजी स्वयंको श्रीमती राधिकाजीकी दासी मानते थे। इसलिए श्रीमती राधिकाजीका अभिनय करनेवाली उन देवदासियोंके प्रति उनकी सेव्य बुद्धि थी। अर्थात् वे पुरुष अभिमानसे उन देवदासियोंकी सेवा नहीं करते थे, अपितु स्वयंको उन देवदासियोंकी दासी जानकर उन दोनोंका शृङ्गार आदि करते थे। इसीलिए उनके मनमें कोई विकार नहीं आता था। तत्पश्चात् उन देवदासियोंको नृत्य आदि सिखाकर प्रसाद खिलाकर श्रीरामानन्दजीने उनके घर भेज दिया।

उन दोनोंके जानेके बाद रामानन्दजीके सेवकने उन्हें प्रद्युम्नमिश्रके आगमनका समाचार दिया। सुनकर वे सभाकक्षमें आये जहाँपर प्रद्युम्नमिश्र उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। वहाँ आकर उन्होंने प्रद्युम्नमिश्रजीको आदरपूर्वक प्रणाम किया तथा विनीत होकर बोले—"मुझे आनेमें बहुत देर हो गयी, आपको बहुत देरतक मेरी प्रतीक्षा करनी पड़ी। इसलिए आपके श्रीचरणोंमें मेरा अपराध हो गया है। कृपया आप मेरे इस अपराधको क्षमा करें। आपके आगमनसे मेरा घर पवित्र हो गया है। मुझे अपना सेवक जानकर आदेश प्रदान कीजिए कि मैं आपकी क्या सेवा करूँ?" यह सुनकर प्रद्युम्नमिश्र कहने लगे—"मैं आपका दर्शन करनेके लिए आया हूँ। आपका दर्शन पाकर मैं पवित्र हो गया।" समय अधिक हो जानेके कारण प्रद्युम्नमिश्रने उनसे कुछ वार्तालाप नहीं किया तथा दूसरा यह सुनकर कि वे किशारी कन्याओंको स्नान कराते हैं, उनकी मालिश करते हैं, उन्हें वस्त्र पहनाते हैं, उनके मनमें रामानन्दजीके प्रति कुछ सन्देह आ गया था, इसलिए उनसे विदायी लेकर वे अपने घर चले आये।

अगले दिन जब प्रद्युम्नमिश्र श्रीमन्महाप्रभुके दर्शनोंके लिए आये तो प्रभुने पूछा—"प्रद्युम्न मिश्रजी! क्या आपने रामानन्दजीसे कथा सुनी?" तब प्रद्युम्नमिश्रने रामानन्दजीके विषयमें जो सुना था, वह सब प्रभुको सुना दिया। उनकी बात सुनकर प्रभु कहने लगे—"मिश्र! मैं तो संन्यासी हूँ, मैं अपनेको विरक्त मानता हूँ। परन्तु स्त्रीके दर्शनकी बात तो बहुत दूर, स्त्रीका नाम सुनते ही मेरे मनमें विकार आ जाता है। क्योंकि वास्तवमें जगत्में ऐसा कौन है, जिसका मन स्त्रीका दर्शन पाकर स्थिर रह सके? परन्तु रामानन्दजीकी महिमा ही विशेष है जिसका वर्णन करना दुष्कर है। तथापि मैं आप सभी लोगोंको उनकी महिमा बता रहा हूँ, आप सब लोग ध्यानसे सुनिये।" ऐसा कहकर महाप्रभु सभी भक्तोंको रामानन्दजीकी महिमा सुनाते हुए कहने लगे—"रामानन्दजी देवदासियोंको, जो परम सुन्दरी एवं किशोरियाँ हैं, स्नान कराते हैं, उनके समस्त अङ्गोंकी मालिश करते हैं, उन्हें वस्त्र-आभूषण धारण करवाते हैं, यहाँ तक कि उनके समस्त अङ्गोंका दर्शन एवं स्पर्श आदि करते हैं, तथापि परम आश्चर्यकी बात है कि उनका तन-मन लकड़ी-पत्थरके समान है, अर्थात् इतना करनेपर भी उनके तन-मनमें लेशमात्र भी विकार नहीं आता। संसारमें एकमात्र रामानन्दजी ही ऐसे अधिकारी हैं। इससे स्पष्ट हो जाता है कि उनका देह-मन अप्राकृत है। उनके मनके

भावोंको तो केवल वे ही जानते हैं, उनके अतिरिक्त कोई भी उनके भावोंको नहीं जान सकता। किन्तु श्रीमद्भागवतके माध्यमसे उसका अनुमान लगाया जा सकता है। भागवतमें इसका प्रमाण है—व्रजगोपियोंके साथ कृष्णके रास-विलासको जो व्यक्ति श्रद्धापूर्वक अर्थात् विश्वासपूर्वक श्रवण करता है, उसके हृदयका कामरोग तत्क्षणात् दूर हो जाता है। वह महाधीर हो जाता है, मायाके तीन गुण उसे क्षुब्ध नहीं कर पाते—

विक्रीड़ितं व्रजवधूभिरिदञ्च विष्णोः
श्रद्धान्वितोऽनुशृणुयादथ वर्णयेद् यः।
भक्तिं परा भगवति प्रतिलभ्य कामं
हृदरोगमाश्वपहिनोत्यचिरेण धीरः॥

(भा—१०/३३/३९)

अर्थात् जो व्यक्ति श्रद्धापूर्वक इस रासपञ्चाध्यायमें वर्णित व्रजवधुओंके साथ कृष्णकी अप्राकृत रासक्रीड़ाको पहले श्रद्धापूर्वक श्रवण करता है, तत्पश्चात् उसका कीर्तन करता है, उस धीर व्यक्तिको भगवान्की पराभक्ति प्राप्त हो जाती है, जिसके फलस्वरूप उसके हृदयसे कामरोग शीघ्र ही दूर हो जाता है। कारण—कृष्णलीला चिन्मय है तथा कृष्ण एवं गोपियाँ भी चिन्मय हैं। अतः इस चिन्मय लीलाका श्रद्धापूर्वक अनुशीलन करते-करते हृदयमें चित्-प्रेम उदय होनेपर सिद्धिकी प्राप्ति हो जाती है। उस समय संसारके प्रति आसक्ति तथा जड़ीय काम-वासना आदि दूर हो जाती है। जब केवल अप्राकृत रासक्रीड़ाके श्रवण-कीर्तन करनेका ही ऐसा अद्भुत फल है, तो जो व्यक्ति भावाविष्ट होकर निरन्तर श्रीश्रीराधाकृष्णकी सेवा करते हैं, उन्हे क्या फल मिलेगा, इस विषयमें फिर क्या कहा जा सकता है? रामानन्दजीकी इन क्रियाओंसे यह निश्चित हो जाता है कि वे कृष्णके नित्यसिद्ध परिकर हैं। रामानन्दजी राग-मार्गसे भक्ति करते हैं तथा उनका सिद्धदेह है। इसीलिए जड़ीय-काम उनपर अपना प्रभाव नहीं डाल पाता है। मैं स्वयं भी रामानन्दजीसे कृष्णकथा श्रवण करता हूँ। अतः मिश्र! यदि तुम्हारी कथा श्रवणकी इच्छा

है, तो पुनः उनके पास जाओ। उनके पास जाकर उनसे कहना कि मैंने तुम्हें उनके पास कथा श्रवण करनेके लिए भेजा है। अतः इससे पहले कि वे सभासे उठ जाएँ, तुम शीघ्र जाओ।"

रामानन्दजीकी महिमा स्वयं श्रीमन्महाप्रभुके श्रीमुखसे श्रवणकर प्रद्युम्नमिश्रको अपने ऊपर बहुत ग्लानि हुई। रामानन्दजीके प्रति उनके हृदयमे अगाध श्रद्धा उमड़ आयी। वे भागे-भागे रामानन्दजीके पास पहुँचे। उनको देखते ही रामानन्दजीने उन्हें प्रणाम किया तथा बोले—"मिश्रजी! मुझे आज्ञा प्रदान कीजिए कि मैं आपकी क्या सेवा करूँ?" सुनकर मिश्र कहने लगे—"रामानन्दजी! मुझे प्रभुने भेजा है, आपसे हरिकथा श्रवण करनेके लिए।" यह सुनकर रामानन्दजी आनन्दित होकर कहने लगे—"आप प्रभुकी आज्ञासे यहाँपर हरिकथा श्रवणके लिए आये हैं, मेरा इससे बड़ा सौभाग्य और क्या हो सकता है?"

ऐसा कहकर रामानन्दजीने उन्हें एकान्तमें ले जाकर आदरपूर्वक बैठाया तथा पूछा कि आप क्या सुनना चाहते हैं? वे बोले—"अन्योंकी क्या बात है, आप तो स्वयं प्रभुके भी उपदेष्टा हैं। मैं एक भिक्षुक विप्र हूँ, अतः आप कृपापूर्वक कथा श्रवण कराकर मेरा पोषण कीजिए। क्या पूछना चाहिए, क्या नहीं, मैं यह सब नहीं जानता। मुझे दीन-हीन देखकर जो मेरे लिए उचित हो, आप स्वयं कृपापूर्वक सुनाइये। तथापि विद्यानगरमें जो कथा आपने प्रभुको सुनाई थी, यदि आप मुझे योग्य पात्र समझें तो वही कथा क्रमानुसार मुझे श्रवण करवाइये।"

तब रामानन्दजी क्रमानुसार कृष्णकथाका कीर्तन करने लगे। वे स्वयं ही मिश्रजीका अधिकार जानकर उसके अनुरूप ही प्रश्न उत्थापित करते, फिर स्वयं ही उसका उत्तर प्रदान करते। इस प्रकार तीन प्रहर बीत गये, परन्तु कथा समाप्त ही नहीं हो रही थी। कथा श्रवण-कीर्तन करते-करते श्रोता-वक्ता दोनों ही अपनी सुध-बुध खो बैठे थे। उन्हें पता ही नहीं चला कि कब सारा दिन व्यतीत हो गया। जब उनके सेवकने कहा कि दिन ढल गया है, तब दोनोंको बाह्य-ज्ञान हुआ। तब रामानन्दजीने कथाको विश्राम दिया तथा सम्मानपूर्वक मिश्रजीको विदा किया। प्रद्युम्नमिश्रकी तो अवस्था ही विचित्र हो रही थी। वे दोनों भुजाएँ उठाकर नाचते हुए बार-बार कह रहे थे—"मैं कृतार्थ हो गया, मैं कृतार्थ हो गया।" घर जाकर मिश्रने स्नान-भोजन आदि किया।

सन्ध्याके समय अति उल्लसित होकर प्रद्युम्नमिश्र महाप्रभुके चरणोंमें गये। प्रभुने पूछा—"मिश्र! क्या तुमने हरिकथा श्रवण की?" यह सुनकर मिश्रजी कहने लगे—"प्रभु! आपने मुझे कृतार्थ कर दिया। मुझे आपने कृपापूर्वक कृष्णकथारूपी समुद्रमें निमज्जित कर दिया। रामानन्दजीकी महिमा कहे बिना नहीं रहा जा रहा है। वे कोई सामान्य मनुष्य नहीं हैं। वे तो साक्षात् कृष्णभक्तिरसमय हैं। प्रभो! रामानन्दजीने मुझे एक बात और कही थी कि मिश्र! जो मैं आपको कथा सुना रहा हूँ, इसका वक्ता मुझे मत समझना। मेरे मुखसे स्वयं प्रभु श्रीगौरचन्द्र ही कथा कह रहे हैं, वे ही वास्तव वक्ता हैं। मैं तो एक वीणाकी भाँति हूँ। वे जैसे कहला रहे हैं, मैं वही कह रहा हूँ। मेरे मुखसे वे ही इन कथाओंका प्रचार कर रहे हैं। इस पृथ्वीमें किसका सामर्थ्य है कि जो श्रीगौरचन्द्रकी लीलाओंको समझ सके?"

इस प्रकार प्रद्युम्नमिश्र श्रीरामानन्दजीकी महिमाका वर्णन करते हुए कहने लगे—" हे प्रभो! मैंने जो सब रसमयी कथाएँ श्रवण कीं, उनसे मुझे पूर्ण विश्वास हो गया है कि कृष्ण ही रसके सागर है, 'रसो वै सः'। ब्रह्मादिके लिए भी इन कथाओंकी कल्पना करना सम्भव नहीं है। ऐसा रस आपने मुझे पान कराया। मैंने जन्म-जन्मोंके लिए स्वयंको आपके हाथों बेच दिया है।"

क्रमशः

श्रील गुरुदेव ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री
श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजी
द्वारा
भारतमें प्रतिष्ठित शुद्धभक्ति प्रचार केन्द्रसमूह

१.	**श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ**, जवाहर हाट, मथुरा, उ. प्र.	☎ ९७१९०७०९३९
२.	**श्रीरूप-सनातन गौड़ीय मठ**, दानगली, वृन्दावन, उ. प्र.	☎ ०९२१९४७८००१
३.	**श्रीश्रीकेशवजी गौड़ीय मठ**, कोलेरडाङ्गा लेन, नवद्वीप, नदीया, प. बं.	☎ ०९३३३२२२७७५
४.	**श्रीदुर्वासा-ऋषि गौड़ीय आश्रम**, ईशापुर, मथुरा, उ. प्र.	☎ ०९९१७६४३९७१
५.	**श्रीगोपीनाथ-भवन,** इमली-तला, परिक्रमा-मार्ग, वृन्दावन, उ. प्र.	☎ ०९६३४५६३७३९
६.	**श्रीगिरिधारी गौड़ीय मठ**, दसविसा, राधाकुण्ड रोड़, गोवर्धन, उ. प्र.	☎ (०५६५)२८१५६६८
७.	**श्रीरमणबिहारी गौड़ीय मठ**, बी-३, जनकपुरी, नई दिल्ली	☎ (०११)२५५३३२६८
८.	**श्रीवामन गोस्वामी गौड़ीय मठ**, ३९ रामानन्द चटर्जी स्ट्रीट, कोलकाता-९	☎ ०९४३३२०३७१८
९.	**श्रीनारायण गोस्वामी गौड़ीय मठ**, ३१/२८ दीनबन्धु मित्रा सरणी, सुभाषपल्ली, सिलीगुड़ी (प.बं.)	☎ ०८६२९९११४००
१०.	**जयश्रीदामोदर गौड़ीय मठ**, चक्रतीर्थ, पुरी, उड़ीसा	☎ ०९७७६२३८३२८
११.	**श्रीराधागोविन्द गौड़ीय मठ**, डी-५, सेक्टर-५५, नोएडा (उ.प्र.)	☎ (०१२०)२५८२०१८
१२.	**श्रीरङ्गनाथ गौड़ीय मठ**, सर्वे-२६, हेसेरघट्टा, नृत्यग्राम कुटीरके पास, बङ्गलोर	☎ (०८०)०२८४६६७६०
१३.	**श्रीश्रीगोविन्दजी गौड़ीय मठ**, मकान-२, गली-५, रूपनगर एन्क्लेव, जम्मू	☎ ०९९०६९०४८०९
१४.	**श्रीराधामाधवजी गौड़ीय मठ**, माधवी कुञ्ज, भूपतवाला, हरिद्वार	☎ (०१३३४)२६०८४५
१५.	**आनन्द धाम गौड़ीय आश्रम**, परिक्रमा मार्ग, रमणरेती, वृन्दावन, उ. प्र.	☎ (०५६५)२५४०८४९
१६.	**श्रीराधामदनमोहन गौड़ीय मठ,** २४५/१, २९वाँ क्रास, खगदास पुर, मैंन रोड़, बङ्गलूरु-५६००९३	☎ ०९९००१९२७३८
१७.	**श्रीश्रीराधामाधव गौड़ीय मठ**, १६२, सैक्टर-१६-ए, फरीदाबाद, हरियाणा	☎ ०९९११२८३८६९

RNI NO. - UPHIN/2004/13352
POSTAL REGN NO. - MATHURA - 013/2022-2024
DATE OF PUBLICATION - 20 JUNE 2022

पारमार्थिक सचित्र हिन्दी पत्रिका श्रीश्रीभागवत-पत्रिकाके सदस्य बनें

एक वर्षीय (1 yr) –	300 रु॰
पञ्च वर्षीय (5 yr) –	1,200 रु॰
आजीवन (Lifetime) –	7,500 रु॰ [750 रु॰ के भक्तिग्रन्थ उपहार]
संरक्षक (Patron) –	10,000 रु॰ [1000 रु॰ के भक्तिग्रन्थ उपहार]

सदस्यता भुगतानके लिए

(१) **Bank to bank NEFT transfer**

Account name:	SRI BHAGVAT PATRIKA SRI GOUDIYA
Account no. :	037201000010611
IFSC code:	IOBA0000372
Bank:	Indian Overseas bank

(To help us update your subscription records after the bank deposit or transfer, immediately send an SMS to 9818779345 with your name, amount deposited and date of deposit.)

(२) **Demand draft or Cheque** (account payee) payable to: "SRI BHAGVAT PATRIKA SRI GOUDIYA" पत्रिका कार्यालयके पते पर Demand draft or Cheque भेजें।

(३) **Money order** निम्न पते पर भेजें।
श्रीरूप-सनातन गौड़ीय मठ, १९४ सेवा-कुञ्ज, वृन्दावन(उ.प्र.)-२८११२१

सम्पर्क सूत्र

श्रीश्रीभागवत-पत्रिका कार्यालय श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ

जवाहर हाट, मथुरा-२८१००१ (उ.प्र.)

श्रीश्रीभागवत पत्रिकामें प्रकाशित प्रबन्ध-समूह एवं विषय-वस्तुसे सम्बन्धित जानकारीके लिए सम्पर्क करें –
e-mail: gokulchandradas@gmail.com
phone: 9897140412

श्रीश्रीभागवत पत्रिकाकी सदस्यता-शुल्कके भुगतान एवं नवीन सदस्यता ग्रहण करनेके लिए सम्पर्क करें –
e-mail: bhagavata.patrika@gmail.com
phone: 9810654916; 8368371929